स्मरणांजलिका

श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ के मंगलमय
अवसर पर जिज्ञासु भक्तजनों को
सादर-सप्रेम भेंट

जय श्री कृष्ण

प्रकाशक

मथुरादास गुप्त एडवोकेट

के. ३८/४, बाग सुन्दरदास

गोलघर, वाराणसी

न्योछावर

सप्रेम स्वाध्याय

मुद्रक

श्रीगोकुल मुद्रणालय

गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी–२२१००१

श्री श्रीनाथजी

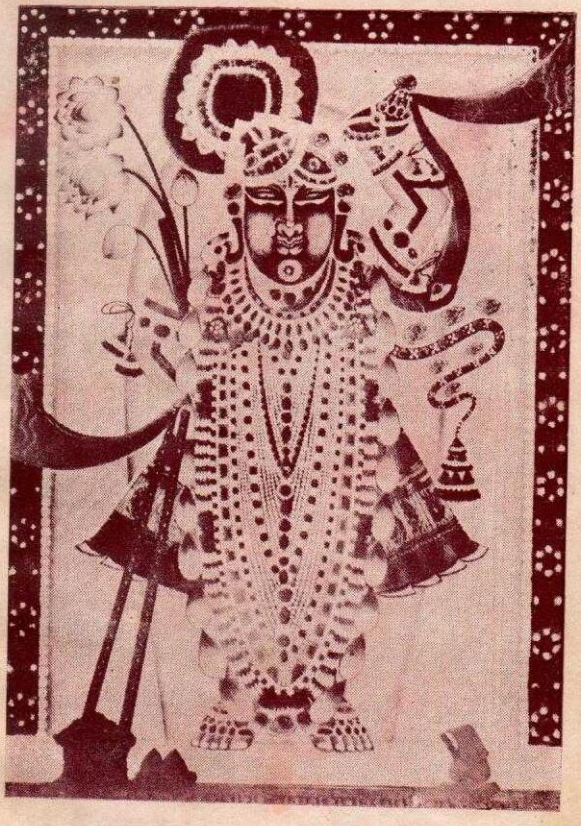

वामे करे गिरिं स्त्रीषु, मुदमिन्द्रे च साध्वसम् ।
धार्यन्तमहं वन्दे, चित्रं गोपेशु गोप्रियम् ।।

शुभाशंसा

श्रीमद्भागवत ज्ञान यज्ञ के शुभ अवसर पर भगवद्-गुणानुवाद की इस 'स्मरणांजलिका' के प्रकाशन का मैं स्वागत करती हूं। मानव को आज सबसे अधिक जिस वस्तु की आवश्यकता है वह है श्रद्धा और विश्वास। भगवान की सेवा, उनका सप्रेम स्मरण तथा उनके नाम-संकीर्तन से ही वह आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है, जिससे मानव अपने जीवन में सुख-शांति तथा आनन्द की अनुभूति कर सकता है। आशा है यह 'स्मरणांजलिका' इसमें सतत सहायक होगी।

गो० शरदवल्लभा

(गो० शरदवल्लभा बेटीजी)

(6)

आत्म-निवेदन

जन्म-जन्मान्तरों के सुकृतों एवं भगवत्कृपा के फल-स्वरूप मानव जीवन और सुसंस्कार प्राप्त होते हैं। गुरुजन तथा माता पिता का इस उपलब्धि में महत्वपूर्ण योगदान होता है। मेरे पूज्य पितृ-चरण प्रातःस्मरणीय स्वर्गीय श्री गोवर्धनदास जी अत्यन्त सरल, सत्यनिष्ठ तथा भगवद्परायण व्यक्ति थे। आपका कार्यक्षेत्र कलकत्ता था, जो मेरी जन्मभूमि भी है। साधारण नौकरी करते हुए मेरे पिता-श्री ने यावत्-जीवन प्रातः सायं नियमित रूप से प्रभु श्री बल्देवजी के मन्दिर में कीर्तन की सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया।

विक्रम संवत् १९७५ में श्रीनाथद्वारा की तीर्थयात्रा से काशी लौटते ही मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी को उनका गोलोकवास हो गया। उस समय मेरी अवस्था मात्र आठ वर्ष की थी। मेरी मातृ-श्री का तो पहले ही जब मैं मात्र आठ माह का था गोलोकवास हो गया था। ऐसी विषम पारिवारिक परिस्थितियों में मेरे जीवन-निर्माण, सत्कर्म की प्रवृत्ति तथा सफलता का समस्त

दासानुदास

मथुरादास गुप्त

अ. सौ. कस्तूरी देवी
धर्मपत्नी, मथुरादास गुप्त

श्रेय भगवद्कृपा तथा मातृ-पितृ चरणों के पुण्य प्रताप को ही है। यह सब कुछ उनकी अदृश्य कृपा शक्ति का प्रत्यक्ष फल है, यह मेरी निश्चित धारणा है। उन्हीं की महती कृपा, सत्प्रेरणा तथा भगवदानुराग के पुण्योदय के फलस्वरूप ही, श्रीमन्महाप्रभु वल्लभाचार्य जी की लीला भूमि काशी में संवत् २०४२ वि० भाद्रपद शुक्ल पंचमी से द्वादशी पर्यन्त श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ का आयोजन हो सका है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस ज्ञानयज्ञ के आध्यात्मिक आलोक से हम सभी का जीवन भगवद्-चरणारविन्दों में सतत अनुरक्त तथा आलोकित रहेगा।

इस शुभ अवसर पर परमश्रद्धेय नित्यलीलास्थ पूज्यपाद षष्ठपीठाधीश्वर गोस्वामी श्री मुरलीधरलाल जी महाराज एवं श्री शुद्धाद्वैत जययज्ञ समिति की संस्थापिका परमश्रद्धेया नित्यलीलास्थ श्री कृष्णप्रिया बेटीजी महाराज का सादर स्मरण स्वाभाविक है। पूज्यपाद महाराज-श्री मेरे लिये सतत सत्प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। परमश्रद्धेया श्री कृष्णप्रिया बेटीजी महाराज ने शुद्धाद्वैत जपयज्ञ समिति की स्थापना के पूर्व से ही भैरवनाथ स्थित अपने निवास राधामोहन

कुन्ज में वैष्णवों को भगवद्गीता, षोडशग्रंथादि का प्रारम्भ कराया था। उन स्वाध्यायकर्त्ताओं में मेरे अतिरिक्त भगवदीय श्री कृष्णदास जी अढतिया, श्री रामकृष्ण दास जी नागर तथा श्री लक्ष्मीशंकर जी व्यास आदि के नाम प्रमुख हैं। आप–श्री के सान्निध्य में उपदेशों तथा स्वाध्याय से मुझमें आध्यात्मिक चेतना का जो नवीन स्फुरण हुआ, वह सदा सर्वदा मेरे मन को अनुप्राणित करता रहा है और चिरस्मरणीय रहैगा।

परमश्रद्धेया पूज्या अम्माजी तथा श्री शुद्धाद्वैत जपयज्ञ समिति की वर्तमान अध्यक्षा श्रद्धेया गोस्वामी श्री शरद्वल्लभा बेटीजी महाराज ने भगवद्सेवा, सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय एवं भगवद् स्मरण की जो प्रेरणा प्रदान की है, उससे वैष्णव समाज के आबाल-वृद्ध स्त्री-पुरुषों में आध्यात्मिक क्रांति की अलौकिक ज्योति का प्रसार व संचार हुआ है। वास्तव में मुझे जो आध्यात्मिक प्रेरणा तथा उपलब्धि प्राप्त हुई वह एकमात्र इन गुरुजनों की महती कृपा का प्रसाद है। इस अवसर पर मैं इन गुरुजनों के प्रति नतमस्तक होता हुआ सादर सविनय अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

प्रस्तुत "स्मरणाञ्जलिका" जीवनोपयोगी संग्रह के साथ इन्हीं गुरुजनों के प्रति श्रद्धा तथा मातृ-पितृ चरणों की पुण्य स्मृति में जिज्ञासु भक्तजनों के हितार्थ सादर समर्पित करता हूं।

इस मंगलमय अवसर पर मैं भारतविख्यात भागवताचार्य परमादरणीय तपोनिष्ठ पण्डित कृष्णशंकर जी शास्त्री महोदय के प्रति भी विनम्र आभार व्यक्त करना अपना पवित्र कर्तव्य समझता हूं। शास्त्रीजी ने देश विदेश में अपने अत्यधिक व्यस्त कार्यक्रमों के होते हुए भी जिस सहृदयता और सहजता से कृपा कर इस भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ में पधार कर मुख्य वक्ता के रूप में प्रवचन करना स्वीकार किया है उसका स्मरण मुझे आजीवन बना रहेगा और इस कृपा के लिये मैं आपका चिरकृतज्ञ रहूंगा।

प्रस्तुत "स्मरणाञ्जलिका" के संग्रह, संकलन तथा सज्जा में श्री भरतनारायण जी गुप्त तथा श्री लक्ष्मी शंकर जी व्यास की सहायता के लिये मैं अत्यन्त आभारी हूं। चौखम्भा संस्कृत संस्थान के संचालक श्री मोहनदास जी गुप्त तथा उनके चिरंजीवी श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त के प्रति भी मैं हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता

हूं जिनकी सहायता और तत्परता के बिना इस पुस्तिका का इतना सुन्दर और शीघ्र मुद्रण सम्भव नहीं था। सम्भव है कि शीघ्रता के कारण पुस्तिका में यत्र-तत्र कतिपय अशुद्धियां रह गयी हों, जिन्हें सहृदय पाठक सुधार कर स्वाध्याय करेंगे।

अपने नित्य स्वाध्यायक्रम में इसका पठन-पाठन कर जिज्ञासु भगवद्-प्रेमी जीवन में शाश्वत आनन्द की प्राप्ति करें, श्री मुकुन्द-गोपाल-मोहन प्रभु से मेरी यही विनम्र प्रार्थना है।

ऋषिपंचमी, २०४२ वि. **मथुरादास गुप्त**

(13)

अनुक्रम

१. प्रातः स्मरणम्	...	१
२. स्तुतिः	...	३
३. श्री बाल-मुकुन्द-स्तुतिः	...	६
४. मंगलाचरणम्	...	८
५. यमुनाष्टकम्	...	१०
६. सिद्धान्तरहस्यम्	...	१२
७. नवरत्नस्तोत्रम्	...	१३
८. श्रीकृष्णाश्रयः	...	१४
९. भक्तिवर्धिनी	...	१६
१०. पंचपद्यानि	...	१८
११. सेवाफलम्	...	१९
१२. श्रीमधुराष्टकम्	...	२०
१३. श्री सर्वोत्तमस्तोत्रम्	...	२२
१४. नन्दकुमाराष्टकम्	...	२६
१५. गिरिराजधार्यष्टकम्	...	२८
१६. श्रीकृष्णशरणाष्टकम्	...	२९
१७. वेणुगीतम्	...	३०
१८. गोपीगीतम्	...	३४
१९. युगलगीतम्	...	३८
२०. भ्रमरगीतम्	...	४३

(14)

२१. श्रीविट्ठलेश स्तुति ... ४५
२२. आश्रय के पद ... ४६
२३. चतुःश्लोकी भागवत् ... ४७
२४. वृत्र चतुःश्लोकी ... ४८
२५. श्री विट्ठलेशकृत चतुःश्लोकी ... ४९
२६. ज्वर चतुःश्लोकी ... ५०
२७. अम्बरीष पञ्चश्लोकी ... ५१
२८. गीतामृत ... ५३
२९. श्री सुदर्शन-कवचम् ... ६१
३०. **पद संग्रह** ... ६६–७७

सूरदास जी—

१. चितवन रोक्यो हू न रह्यो ... ६६
२. चल सखी तिह सरोवर जांहि ... ६७
३. चकई री! चलि चरन सरोवर ... ६८

संत नरसी मेहता—

४. तारा दास नीं चरण नी रेणु मस्तक धरूं ... ७०
५. भूतल भक्ति पदारथ मोटुं ... ७१

संत सहजो बाई—

६. राम तजूं मैं गुरु को न विसारूं ... ७३

संत दयाबाई—

७. भव जल नदी भयावनी ... ७४

संत कबीरदास—

८. चादर हो गई बहुत पुरानी ... ७५

संत नानक देव—

९. हरि बिन तेरो कौन सहाय ... ७६

संत रैदास—

१०. नरहरि, चञ्चल है मति मोरी ... ७७

११. **भजन संग्रह** ... ७८–९५

१. हरि नु नाम रसायण सेवे ... ७८

२. एवुं श्री वल्लभ प्रभु नुं नाम ... ८१

३. समय मारो साधजे ह्वाला ... ८२

४. मां बाप ने भूलसो नहि ... ८३

नि. ली. श्री कृष्णप्रिया बेटीजी—

५. मोहन से मन लगाना हो ... ८४

६. भज ले प्रेम मगन हो मनवा ... ८५

७. आंखों में तू समा जा ... ८६

८. नायक हो तुम्हीं बृज मंडल के ... ८६

९. न दे दोगे दया की भीख ... ८७

१०. भज ले हमेशा दिल में ... ८८

११. जो देख रहा वह सपना है ... ८८

१२. एक दिन देह विरानी होय ... ८९

१३. निज चरण में नाथ मेरी ... ९०

१४. मचा आनन्द गोकुल में ... ९०
१५. मेरी मिट्टी को भगवन् ... ९१
१६. कृष्ण का नाम मुख से ... ९२
१७. गोवर्धन की सघन कुंज में ... ९२
१८. श्री कृष्णः शरणं मम ... ९३
१९. अब प्रभु कृपा करो यह भांती ... ९५
३२. नि. ली. श्रीकृष्णप्रियाजी के वचनामृत ९६
३३. संत डोंगरेजी ना वचनामृत ... ९९

श्री मुकुन्दरायजी

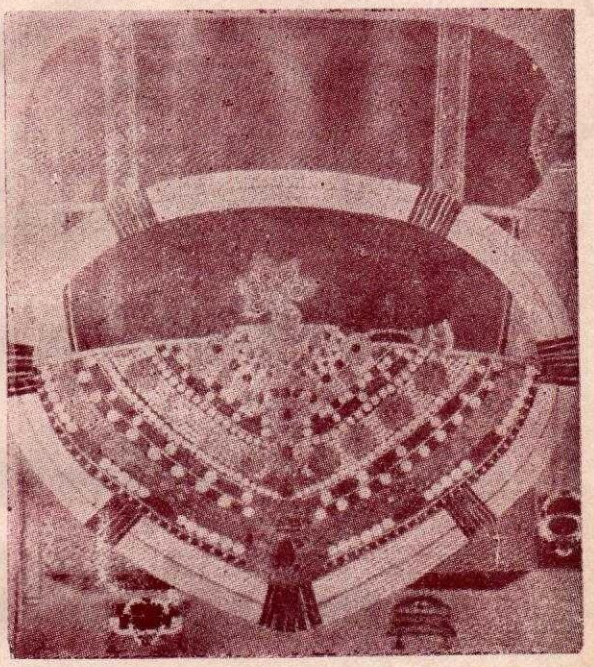

पाटोत्सव माघ शु० ४

यः स्वीयान् गतसाधनानगणयन् नानापराधान् परा-
नेकेनैव कृपासुधाजलधरासारेण संसिञ्चति ।
श्यामत्वं निजशोभयाऽपरवपुर्ध्यानेन यद्गौरतां
तं रायोत्तर-शब्दमुद्धृतनिजं श्रीमन्मुकुन्दं भजे ।।

प्रातः स्मरणम्

प्रातः शय्या पर—

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमूले सरस्वती।
करमध्ये तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ॥१॥

शय्या से पृथ्वी पर उतरते—

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
धरादेवि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥२॥

दांतन के समय—

वनस्पते मनुष्याणामुद्धृतस्वास्यशुद्धये।
कृष्णसेवार्थकस्यासु, मुखं मे विमलं कुरु ॥३॥

स्नान के समय—

श्रीकृष्णवल्लभे देवि, यमुने तापहारिणि।
सेवायै स्नातुमिच्छामि, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥४॥

चरणामृत लेते समय—

गृह्णामि गोकुलाधीश, चरणामृतमादरात्।
अतस्त्वत् सेवनासिद्धयै मयि दीने दयां कुरु ॥५॥

पूर्णपुरुषोत्तम स्मरण—

प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं,
पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम्।
यस्मिन्निदं जगदशेष-मशेष-मूर्तौ
रज्ज्वां भुजङ्गम इव प्रतिभासितं वै ॥६॥

श्रीकृष्ण स्मरण—

प्रातर्भजामि मनसो वचसामगम्यं,
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण ।
यन्नेति नेतिवचनैर्निगमा अवोचुस्
तं देवदेवमजमच्युत-माहुरग्र्यम् ॥७॥

व्रजस्त्रीविप्रयोगाग्निशमनाय च उत्थितः ।
दिनान्ते अद्भुतजोमुतस्तत्छायास्तु सदा मयि ॥८॥

आचार्यचरण स्मरण—

आचार्यचरणद्वंद्वं भक्तिज्ञानाब्जभास्करम् ।
नमस्यामि मनःकर्मवाग्भिरन्तस्तमोपहम् ॥ ९ ॥

गोसाईं श्रीविट्ठलेशजी स्मरण—

यत्कृपादृष्टिवृष्ट्या वै, दैवदग्धोऽपि तत्क्षणात् ।
प्ररोहति निजेच्छातस्तं वन्दे कमपीश्वरम् ॥१०॥

क्षमायाचन—

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥११॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥१२॥

श्री गोपाललालजी

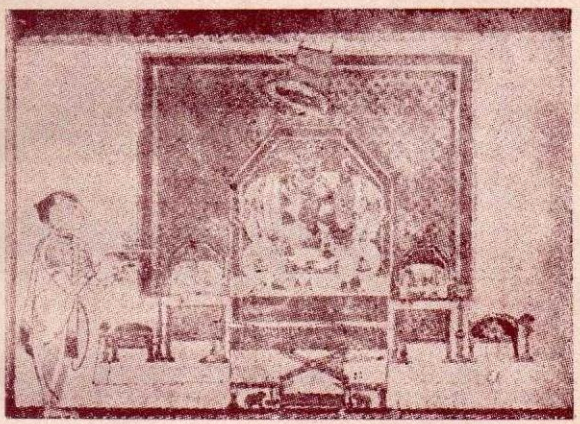

पाटोत्सव भाद्रपद कृष्ण ५

श्रीमद्गोपाललालं मृगमदविलसद्भालमालं कृतस्व
स्वामिन्या सुस्मितास्यं-ललित-गति-लसन्माल गोपालबालं।
वेणौ विन्यस्तहस्तं रतिपति-मदहृत्स्वर्णगात्रं सुनेत्रं
रास-क्रीडादिलोलं सुललित-वसनं राधिकेशं नमामि ।।

स्तुतिः

श्रीकृष्ण स्तुति—

वंदे श्रीकृष्णदेवं सुरनरकमिदं वेदवेदान्तवेद्यम्।
लोके भक्तिप्रसिध्यै यदुकुलजलधौ प्रादुरासीदपाराः॥

यस्यासीद्रूपमेतत्त्रिभुवनतरणे
भक्तिश्च स्वतन्त्रम्।
शास्त्रं रूपं च लोकं प्रकटयति मुदा
यः स नो भूतिहेतुः॥ १॥

बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं,
बिभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम्।
रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दै-
र्वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्तिः॥

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्,
पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात्,
कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने॥

दूरन्तं दुःखाब्धिहसितसुधया शोषयति यो
यदास्येन्दुर्गोपीनयननलिनानन्दकरणम्।

अनङ्गः साङ्गत्वं व्रजति मम तस्मिन् मुररिपौ,
रतिप्रादुर्भावो भवतु सततं श्रीपरिवृढे ॥

एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीत-
मेको देवो देवकी पुत्र एव ।
एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि,
कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा ॥ ५ ॥

श्रीमद्भागवत महिमा—

निगमकल्पतरोर्गलितं फलं,
शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् ।
पिबत भागवतंरसमालयम् ,
मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः ॥ ६ ॥

श्रीमद्वल्लभाचार्य स्तुति—

अज्ञानान्धकारप्रशमनपटुता
व्यापनाय त्रिलोक्याम् ।
अग्नित्वं वर्णितन्ते कविभिरपि सदा
वस्तुतः कृष्ण एव ॥ ७ ॥
प्रादुर्भूतो भवानित्यनुभवनिगमा-
युक्तमानैरवेत्य ।
त्वां श्रीश्रीवल्लभे मे निखिलबुधजनाः
गोकुलेशं भजन्ते ॥

श्रीकृष्ण ध्यान—

कालिन्दीकूलकल्पद्रुमतलविलसत्
पद्मपादारविन्दो,
मन्दान्दोलाङ्गुलीभिर्मुखरितमुरली-
मन्द्रसान्द्राभिनन्दः ।
राधावक्त्रेन्दुमन्दस्मितमधुरसुधा-
स्वादुसन्दोहसान्द्रः ।
श्रीमद्वृन्दावनेन्दुः प्रभवतु भवतां
भूतले कृष्णचन्द्रः ॥ ८ ॥

श्रीमदाचार्य जी के त्रित्यात्मक स्वरूप की स्तुति—

सौन्दर्यं निजहृद्गतं प्रकटितं स्त्रीगूढभावात्मकं,
पुरुषं च पुनस्तदन्तरगतं प्राचीविशत् स्वप्रिये ।
संश्लिष्टावुभयोर्बभौ रसमयं कृष्णो हि यत्साक्षिकं,
रूपं तत् त्रितयात्मकं परमभिर्ध्येयं सदा वल्लभम् ॥

श्रीकृष्ण वंदन—

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वंदे जगद्गुरुम् ॥ १० ॥
मूकं करोति वाचालं पंगुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥ ११ ॥

श्री बाल-मुकुन्द-स्तुतिः

करारविन्देन पदारविन्दं,
मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं,
बालंमुकुन्दं मनसा स्मरामि ।

श्रीकृष्णगोविन्द हरे मुरारे,
हे नाथ नारायण वासुदेव ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव,
गोविन्द दामोदर माधवेति ।

विक्रेतुकामा किल गोपकन्या,
मुरारि-पादर्पितचित्तवृत्तिः ।
दध्यादिकं मोहवशादवोचद्,
गोविन्द दामोदर माधवेति ।

गृहे-गृहे गोपवधू कदम्बाः,
सर्वे मिलित्वा समवाप्य योगम् ।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं,
गोविन्द दामोदर माधवेति ।

सुखं शयाना निलये निजेऽपि,
नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्याः ।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
जिह्वे ! सदैव भज सुन्दराणि,
नामानि कृष्णस्य मनोहराणि ।
समस्तभक्तार्तिविनाशनानि,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
सुखावसाने इदमेव सारं,
दुःखावसाने इदमेव ज्ञेयम् ।
देहावसाने इदमेव जाप्यं,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश,
गोपाल गोवर्धननाथ विष्णो ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
संसारकूपे पतितोऽत्यगाधे,
मोहान्धपूर्णे विषयातिशक्तः ।
करावलम्बं मम देहि नाथ,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

अथ मंगलाचरणम्

(१)

श्रीगोवर्धननाथपादयुगलं हैयङ्गवीनप्रियं
नित्यं श्रीमथुराधिपं सुखकरं श्रीविट्ठलेशं मुदा।
श्रीमद्द्वारवतीशगोकुलपती श्रीगोकुलेन्दुं विभुं
श्रीमन्मन्मथमोहनं नटवरं श्रीबालकृष्णं भजे॥

(२)

श्रीमद्वल्लभविट्ठलौ गिरिधरं गोविन्दरायाभिधं
श्रीमद्बालककृष्णगोकुलपती नाथं रघूणां तथा।
एवं श्रीयदुनायकं किल घनश्यामं च तद्वंशजान्
कालिन्दीं स्वगुरुं गिरिं गुरुविभुं स्वीयप्रभूंश्च स्मरेत्॥

(३)

चिन्तासन्तानहन्तारो यत्पादाम्बुजरेणवः।
स्वीयानां तान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः॥

(४)

यदनुग्रहतो जन्तुः सर्वदुःखातिगो भवेत्।
तमहं सर्वदा वन्दे श्रीमद्वल्लभनन्दनम्॥

(६)

(५)

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥

(६)

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धिशायिनम् ।
लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ॥

(७)

चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च त्रिभिस्तथा ।
षड्भिर्विराजते योऽसौ पञ्चधा हृदये मम ॥

अथ यमुनाष्टकम्

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ।

नमामि यमुनामहं सकलसिद्धिहेतुं मुदा
मुरारिपदपङ्कजस्फुरदमन्दरेणूत्कटाम् ।
तटस्थनवकाननप्रकटमोदपुष्पाम्बुना
सुरासुरसुपूजितस्मरपितुः श्रियं बिभ्रतीम् ॥ १ ॥
कलिन्दगिरिमस्तके पतदमन्दपूरोज्ज्वला
विलासगमनोल्लसत्प्रकटगण्डशैलोन्नता ।
सघोषगतिदन्तुरा समधिरूढदोलोत्तमा
मुकुन्दरतिवर्द्धिनी जयति पद्मबन्धोः सुता ॥ २ ॥
भुवं भुवनपावनीमधिगतामनेकस्वनैः
प्रियाभिरिव सेवितां शुकमयूरहंसादिभिः ।
तरङ्गभुजकङ्कणप्रकटमुक्तिकावालुका
नितम्बतटसुन्दरीं नमत कृष्णतुर्यप्रियाम् ॥ ३ ॥
अनन्तगुणभूषिते शिवविरञ्चिदेवस्तुते
घनाघननिभे सदा ध्रुवपराशराभीष्टदे ।
विशुद्धमथुरातटे सकलगोपगोपीवृते
कृपाजलधिसंश्रिते मम मनः सुखं भावय ॥ ४ ॥
यया चरणपद्मजा मुररिपोः प्रियंभावुका
समागमनतोऽभवत्सकलसिद्धिदा सेवताम् ।

श्री यमुना महाराणीजी

नमामि यमुनां कृष्णतुर्यप्रियतमामहम् ।
निजाचार्यपदाम्भोजदासे भावं प्रयच्छतु ।।

तया सदृशतामियात्कमलजा सपत्नीव य-
द्धरिप्रियकलिन्दया मनसि मे सदा स्थीयताम् ॥५॥
नमोऽस्तु यमुने सदा तव चरित्रमत्यद्भुतम् ,
न जातु यमयातना भवति ते पयःपानतः ।
यमोऽपि भगिनीसुतान्कथमुहन्ति दुष्टानपि
प्रियो भवति सेवनात्तव हरेर्यथा गोपिकाः ॥ ६ ॥
ममास्तु तव सन्निधौ तनुनवत्वमेतावता
न दुर्लभमा रतिर्मुररिपौ मुकुन्दप्रिये ।
अतोऽस्तु तव लालना सुरधुनी परं सङ्गमा-
त्तवैव भुवि कीर्तिता न तु कदापि पुष्टिस्थितैः ॥ ७ ॥
स्तुतिं तव करोति कः कमलजासपत्निप्रिये
हरेर्यदनुसेवया भवति सौख्यमामोक्षतः ।
इयं तव कथाधिका सकलगोपिकासङ्गम-
स्मरश्रमजलाणुभिः सकलगात्रजैः सङ्गमः ॥ ८ ॥
तवाष्टकमिदं मुदा पठति सूरसूते सदा
समस्तदुरितक्षयो भवति वै मुकुन्दे रतिः ।
तया सकलसिद्धयो मुररिपुश्च सन्तुष्यति
स्वभावविजयो भवेद्वदति वल्लभः श्रीहरेः ॥ ९ ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं श्रीयमुनाष्टकस्तोत्रं
सम्पूर्णम् ॥

(34)

अथ सिद्धान्तरहस्यम्

श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि ।
साक्षाद्भगवता प्रोक्तं तदक्षरश उच्यते ॥ १ ॥
ब्रह्मसम्बन्धकरणात् सर्वेषां देहजीवयोः ।
सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषाः पञ्चविधाः स्मृताः ॥ २ ॥
सहजा देहकालोत्था लोकवेदनिरूपिताः ।
संयोगजाः स्पर्शजाश्च न मन्तव्याः कथंचन ॥ ३ ॥
अन्यथा सर्वदोषाणां न निवृत्तिः कथंचन ।
असमर्पितवस्तूनां तस्माद्वर्जनमाचरेत् ॥ ४ ॥
निवेदिभिः समर्प्यैव सर्वं कुर्यादिति स्थितिः ।
न मतं देवदेवस्य सामिभुक्तं समर्पणम् ॥ ५ ॥
तस्मादादौ सर्वकार्ये सर्ववस्तुसमर्पणम् ।
दत्तापहारवचनं तथा च सकलं हरेः ॥ ६ ॥
न ग्राह्यमिति वाक्यं हि भिन्नमार्गपरं मतम् ।
सेवकानां यथा लोके व्यवहारः प्रसिद्ध्यति ॥ ७ ॥
तथा कार्यं समर्प्यैव सर्वेषां ब्रह्मता ततः ।
गङ्गात्वं सर्वदोषाणां गुणदोषादिवर्णना ।
गङ्गात्वेन निरूप्या स्यात्तद्वदत्रापि चैव हि ॥ ८ ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं सिद्धान्तरहस्यं
समाप्तम् ॥

अथ नवरत्नस्तोत्रम्

चिन्ता कापि न कार्या निवेदितात्मभिः कदापीति ।
भगवानपि पुष्टिस्थो न करिष्यति लौकिकीं च गतिम् ॥ १ ॥
निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः ।
सर्वेश्वरश्च सर्वात्मा निजेच्छातः करिष्यति ॥ २ ॥
सर्वेषां प्रभुसम्बन्धो न प्रत्येकमिति स्थितिः ।
अतोऽन्यविनियोगेऽपि चिन्ता का स्वस्य सोऽपि चेत् ॥ ३ ॥
अज्ञानादथवा ज्ञानात् कृतमात्मनिवेदनम् ।
यैः कृष्णसात्कृतप्राणैस्तेषां का परिदेवना ॥ ४ ॥
तथा निवेदने चिन्ता त्याज्या श्रीपुरुषोत्तमे ।
विनियोगेऽपि सा त्याज्या समर्थो हि हरिः स्वतः ॥ ५ ॥
लोके स्वास्थ्यं तथा वेदे हरिस्तु न करिष्यति ।
पुष्टिमार्गस्थितो यस्मात्साक्षिणो भवताऽखिलाः ॥ ६ ॥
सेवाकृतिर्गुरोराज्ञावाधनं वा हरीच्छया ।
अतः सेवापरं चित्तं विधाय स्थीयतां सुखम् ॥ ७ ॥
चित्तोद्वेगं विधायापि हरिर्यद्यत् करिष्यति ।
तथैव तस्य लीलेति मत्वा चिन्तां द्रुतं त्यजेत् ॥ ८ ॥
तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम ।
वदद्भिरेव सततं स्थेयमित्येव मे मतिः ॥ ९ ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं नवरत्नस्तोत्रं
समाप्तम् ॥

अथ श्रीकृष्णाश्रयः

सर्वमार्गेषु नष्टेषु कलौ च खलधर्मिणि ।
पाषण्डप्रचुरे लोके कृष्ण एव गतिर्मम ॥ १ ॥

म्लेच्छाक्रान्तेषु देशेषु पापैकनिलयेषु च ।
सत्पीडाव्यग्रलोकेषु कृष्ण एव गतिर्मम ॥ २ ॥

गङ्गादितीर्थवर्येषु दुष्टैरेवावृतेष्विह ।
तिरोहिताधिदैवेषु कृष्ण एव गतिर्मम ॥ ३ ॥

अहङ्कारविमूढेषु सत्सु पापानुवर्तिषु ।
लाभपूजार्थयत्नेषु कृष्ण एव गतिर्मम ॥ ४ ॥

अपरिज्ञाननष्टेषु मंत्रेष्वव्रतयोगिषु ।
तिरोहितार्थदैवेषु कृष्ण एव गतिर्मम ॥ ५ ॥

नानावादविनष्टेषु सर्वकर्मव्रतादिषु ।
पाषण्डैकप्रयत्नेषु कृष्ण एव गतिर्मम ॥ ६ ॥

अजामिलादिदोषाणां नाशकोऽनुभवे स्थितः ।
ज्ञापिताखिलमाहात्म्यः कृष्ण एव गतिर्मम ॥ ७ ॥

प्राकृताः सकला देवा गणितानन्दकं बृहत् ।
पूर्णानन्दो हरिस्तस्मात्कृष्ण एव गतिर्मम ॥ ८ ॥

विवेकधैर्यभक्त्यादिरहितस्य विशेषतः ।
पापासक्तस्य दीनस्य कृष्ण एव गतिर्मम ॥ ९ ॥
सर्वसामर्थ्यसहितः सर्वत्रैवाखिलार्थकृत् ।
शरणस्थसमुद्धारं कृष्णं विज्ञापयाम्यहम् ॥१०॥
कृष्णाश्रयमिदं स्तोत्रं यः पठेत्कृष्णसन्निधौ ।
तस्याश्रयो भवेत्कृष्ण इति श्रीवल्लभोऽब्रवीत् ॥११॥

इति वल्लभाचार्यविरचितं श्रीकृष्णाश्रयस्तोत्रं
समाप्तम् ॥

अथ भक्तिवर्धिनी

यथा भक्तिः प्रवृद्धा स्यात्तथोपायो निरूप्यते ।
बीजभावे दृढे तु स्यात्स्यागाच्छ्रवणकीर्तनात् ॥ १ ॥

बीजदार्ढ्यप्रकारस्तु गृहे स्थित्वा स्वधर्मतः ।
अव्यावृत्तो भजेत्कृष्ण पूजया श्रवणादिभिः ॥ २ ॥

व्यावृत्तोऽपि हरौ चित्तं श्रवणादौ यतेत्सदा ।
ततः प्रेम तथासक्तिर्व्यसनं च यदा भवेत् ॥ ३ ॥

बीजं तदुच्यते शास्त्रे दृढं यन्नापि नश्यति ।
स्नेहाद्रागविनाशः स्यादासक्त्यास्याद् गृहारुचिः ॥४॥

गृहस्थानां बाधकत्वमनात्मत्वं च भासते ।
यदा स्याद् व्यसनं कृष्णे कृतार्थः स्यात्तदैव हि ॥५॥

तादृशस्यापि सततं गृहस्थानं विनाशकम् ।
त्यागं कृत्वा यतेद्यस्तु तदर्थायैकमानसः ॥ ६ ॥

लभते सुदृढां भक्तिं सर्वतोऽप्यधिकां पराम् ।
त्यागे बाधकभूयस्त्वं दुःसंसर्गात्तथाऽन्नतः ॥ ७ ॥

अतः स्थेयं हरिस्थाने तदीयैः सह तत्परैः ।
अदूरे विप्रकर्षे वा यथा चित्तं न दुष्यति ॥ ८ ॥

सेवायां वा कथायां वा यस्यासक्तिर्दृढा भवेत् ।
यावज्जीवं तस्य नाशो न क्वापीति मतिर्मम ॥ ९ ॥

बाधसंभावनायां तु नैकान्ते वास इष्यते ।
हरिस्तु सर्वतो रक्षां करिष्यति न संशयः ॥१०॥

इत्येव भगवच्छास्त्रं गूढतत्त्वं निरूपितम् ।
य एतत्समधीयीत तस्यापि स्याद् दृढा रतिः ॥११॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचिता भक्तिवर्धिनी
समाप्ता ॥

अथ पंचपद्यानि

श्रीकृष्णरसविक्षिप्तमानसाऽरतिवर्जिताः ।
अनिर्वृता लोकवेदे ते मुख्याः श्रवणोत्सुकाः ॥ १ ॥

विक्लिन्नमनसो ये तु भगवत्स्मृतिविह्वलाः ।
अर्थैकनिष्ठास्ते चापि मध्यमाः श्रवणोत्सुकाः ॥ २ ॥

निःसन्दिग्धं कृष्णतत्त्वं सर्वभावेन ये विदुः ।
ते त्वावेशात्तु विकला निरोधाद्वा न चान्यथा ॥ ३ ॥

पूर्णभावेन पूर्णार्थाः कदाचिन्न तु सर्वदा ।
अन्यासक्तास्तु ये केचिदधमाः परिकीर्तिताः ॥ ४ ॥

अनन्यमनसो मर्त्या उत्तमाः श्रवणादिषु ।
देशकालद्रव्यकर्तृमन्त्रकर्मप्रकारतः ॥ ५ ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितानि पञ्चपद्यानि
समाप्तानि ॥

अथ सेवाफलम्

यादृशी सेवना प्रोक्ता तत्सिद्धौ फलमुच्यते ।
अलौकिकस्य दाने हि चाद्यः सिद्ध्येन्मनोरथः ॥१॥
फलं वा ह्यधिकारो वा न कालोऽत्र नियामकः ।
उद्वेगः प्रतिबन्धो वा भोगो वा स्यात्तु बाधकम् ॥२॥
अकर्तव्यं भगवतः सर्वथा चेद्गतिर्न हि ।
यथा वा तत्त्वनिर्द्धारो विवेकः साधनं मतम् ॥ ३ ॥
बाधकानां परित्यागो भोगेऽप्येकं तथापरम् ।
निष्प्रत्यूहं महान् भोगः प्रथमे विशते सदा ॥ ४ ॥
स विघ्नोऽल्पो घातकः स्याद्बलादेतौ सदा मतौ ।
द्वितीये सर्वथा चिंता त्याज्या संसारनिश्चयात् ॥५॥
नन्वाद्ये दातृता नास्ति तृतीये बाधकं गृहम् ।
अवश्येयं सदा भाव्यं सर्वमन्यन्मनोभ्रमः ॥ ६ ॥
तदीयैरपि तत्कार्यं पुष्टौ नैव विलम्बयेत् ।
गुणक्षोभेऽपि द्रष्टव्यमेतदेवेति मे मतिः ।
कुसृष्टिरत्र वा काचिदुत्पद्येत स वै भ्रमः ॥ ७ ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यकृतं सेवाफलनिरूपणं समाप्तम् ॥

अथ श्रीमधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं
नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ १॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं
वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ २॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः
पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं
भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं
हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ५ ॥
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा
यमुना मधुरा वीचिर्मधुरा ।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ६ ॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा
युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम् ।
इष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ७ ॥
गोपा मधुरा गावो मधुरा
यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ८ ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं मधुराष्टकं समाप्तम् ॥

अथ श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रम्

प्राकृतधर्मानाश्रयमप्राकृतनिखिलधर्मरूपमिति ।
निगमप्रतिपाद्यं यत्तच्छुद्धं साकृतिस्तौमि ॥ १ ॥

कलिकालतमश्छन्नदृष्टित्वाद्विदुषामपि ।
सम्प्रत्यविषयस्तस्य माहात्म्यं समभूद् भुवि ॥ २ ॥

दयया निजमाहात्म्यं करिष्यन् प्रकटं हरिः ।
वाण्या यदा तदा स्वास्यं प्रादुर्भूतं चकार हि ॥ ३ ॥

तदुक्तमपि दुर्बोधं सुबोधं स्याद्यथा तथा ।
तन्नामाष्टोत्तरशतं प्रवक्ष्याम्यखिलाघहृत् ॥ ४ ॥

ऋषिरग्निकुमारस्तु नाम्नां छन्दो जगत्यसौ ।
श्रीकृष्णाऽस्यं देवता च बीजं कारुणिकः प्रभुः ॥ ५ ॥

विनियोगो भक्तियोगप्रतिबन्धविनाशने ।
कृष्णाधरामृतास्वादसिद्धिरत्र न संशयः ॥ ६ ॥

आनन्दः परमानन्दः श्रीकृष्णास्यं कृपानिधिः ।
दैवोद्धारप्रयत्नात्मा स्मृतिमात्रार्तिनाशनः ॥ ७ ॥

श्रीभागवतगूढार्थप्रकाशनपरायणः ।
साकारब्रह्मवादैकस्थापको वेदपारगः ॥ ८ ॥

जगद्गुरु श्री वल्लभाचार्यजी

आनन्दः परमानन्दः श्रीकृष्णस्यं कृपानिधिः ।
दैवोद्धारप्रयत्नात्मा स्मृतिमात्रार्तिनाशनः ।।

मायावादनिराकर्ता सर्ववादिनिरासकृत् ।
भक्तिमार्गाब्जमार्तण्डः स्त्रीशूद्राद्यूद्धृतिक्षमः ॥ ९ ॥
अङ्गीकृत्यैव गोपीशवल्लभीकृतमानवः ।
अङ्गीकृतौ समर्यादो महाकारुणिको विभुः ॥१०॥
अदेयदानदक्षश्च महोदारचरित्रवान् ।
प्राकृतानुकृतिव्याजमोहितासुरमानुषः ॥११॥
वैश्वानरो वल्लभाख्यः सद्रूपोद्दितकृत्सताम् ।
जनशिक्षाकृते कृष्णभक्तिकृन्निखिलेष्टदः ॥१२॥
सर्वलक्षणसम्पन्नः श्रीकृष्णज्ञानदो गुरुः ।
स्वानन्दतुन्दिलः पद्मदलायतविलोचनः ॥१३॥
कृपादृग्वृष्टिसंहृष्टदासदासीप्रियः पतिः ।
रोषदृक्पातसंप्लुष्टभक्तद्विड् भक्तसेवितः ॥१४॥
सुखसेव्यो दुराराध्यो दुर्लभांघ्रिसरोरुहः ।
उग्रप्रतापो वाक्सीधुपूरिताशेषसेवकः ॥१५॥
श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षमः ।
तत्सारभूतरासस्त्रीभावपूरितविग्रहः ॥१६॥
सान्निध्यमात्रदत्तश्रीकृष्णप्रेमा विमुक्तिदः ।
रासलीलैकतात्पर्यः कृपयैतत्कथाप्रदः ॥१७॥
विरहानुभवैकार्थसर्वत्यागोपदेशकः ।
भक्त्याचारोपदेष्टा च कर्ममार्गप्रवर्तकः ॥१८॥

यागादौ भक्तिमार्गैकसाधनत्वोपदेशकः ।
पूर्णानन्दः पूर्णकामो वाक्पतिर्विबुधेश्वरः ॥१९॥
कृष्णनामसहस्रस्य वक्ता भक्तपरायणः ।
भक्त्यावारोपदेशार्थनानावाक्यनिरूपकः ॥२०॥
स्वार्थोज्झिताखिलप्राणप्रियस्तादृशवेष्टितः ।
स्वदासार्थकृताशेषसाधनः सर्वशक्तिधृक् ॥ २१ ॥
भुवि भक्तिप्रचारैककृते स्वान्वयकृत्पिता ।
स्ववंशे स्थापिताशेषस्वमाहात्म्यः समयापहः ॥२२॥
पतिव्रतापतिः पारलौकिकैहिकदानकृत् ।
निगूढहृदयोऽनन्यभक्तेषु ज्ञापिताशयः ॥२३॥
उपासनादिमार्गातिमुग्धमोहनिवारकः ।
भक्तिमार्गे सर्वमार्गवैलक्षण्यानुभूतिकृत् ॥२४॥
पृथक्शरणमार्गोपदेष्टा श्रीकृष्णहार्दवित् ।
प्रतिक्षणनिकुञ्जस्थलीलारससुपूरितः ॥२५॥
तत्कथाक्षिप्तचित्तस्तद्विस्मृतान्यो व्रजप्रियः ।
प्रियव्रजस्थितिः पुष्टिलीलाकर्ता रहःप्रियः ॥२६॥
भक्तेच्छापूरकः सर्वाज्ञातलीलोऽतिमोहनः ।
सर्वासक्तो भक्तमात्रासक्तः पतितपावनः ॥२७॥
स्वयशोगानसंहृष्टहृदयाम्भोजविष्टरः ।
यशःपीयूषलहरीप्लावितान्यरसः परः ॥२८॥

लीलामृतरसार्द्रार्द्रीकृताखिलशरीरभृत् ।
गोवर्धनस्थित्युत्साहस्तल्लीलाप्रेमपूरितः ॥२९॥

यज्ञभोक्ता यज्ञकर्ता चतुर्वर्गविशारदः ।
सत्यप्रतिज्ञस्त्रिगुणातीतो नयविशारदः ॥३०॥

स्वकीर्तिवर्धनस्तत्त्वसूत्रभाष्यप्रदर्शकः ।
मायावादाख्यतूलाग्निर्ब्रह्मवादनिरूपकः ॥३१॥

अप्राकृताऽखिलाकल्पभूषितः सहजस्मितः ।
त्रिलोकीभूषणं भूमिभाग्यं सहजसुन्दरः ॥३२॥

अशेषभक्तसम्प्रार्थ्यचरणाब्जरजोधनः ।
इत्यानन्दनिधेः प्रोक्तं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥३३॥

श्रद्धाविशुद्धबुद्धिर्यः पठत्यनुदिनं जनः ।
स तदेकमनाः सिद्धिमुक्तां प्राप्नोत्यसंशयम् ॥३४॥

तदप्राप्तौ वृथा मोक्षस्तदाप्तौ तद्गतार्थता ।
अतः सर्वोत्तमस्तोत्रं जप्यं कृष्णरसार्थिभिः ॥३५॥

इति श्रीमदग्निकुमारप्रोक्तं सर्वोत्तमस्तोत्रं
संपूर्णम् ॥

अथ नन्दकुमाराष्टकम्

सुंदरगोपालम् उरवनमालम् नयनविशालं दुःखहरं
वृन्दावनचन्द्रम् आनंदकन्दं परमानन्दं धरणिधरम् ।
वल्लभघनश्यामं पूर्णकामं अत्यभिरामं प्रीतिकरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।१

सुन्दरवारिजवदनं निर्जितमदनं आनन्दसदनं मुकुटधरं
गुञ्जाकृतिहारं विपिनविहारं परमोदारं चीरहरम् ।
वल्लभपटपीतं कृतमुपवीतं करनवनीतं विबुधवरम्
भजनन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।२।

शोभितमुखधूलं यमुनाकूलं निपट अतूलं सुखदतरम्
मुखमण्डितरेणुं चारितधेनुं वाजितवेणुं मधुरसुरम् ।
वल्लभअतिविमलंशुभपदकमलंनखरुचिअमलंतिमिरहरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।३

शिरमुकुटसुदेशं कुञ्चितकेशं नटवरवेषं कामवरं
मायाकृतमनुजं हलधरसहजं प्रतिहतदनुजं भारहरम्
वल्लभजपालं सुभगसुचालं हितमनुकालं भाववरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।४

इन्दीवरभासं प्रकटसरासं कुसुमविकासं वंशिधरं
जितमन्मथमानं रूपनिधानं कृतकलगानं चित्तहरम् ।
वल्लभमृदुहासं कुञ्जनिवासं विविधविलासं केलिकरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।५

अतिपरमप्रवीणं पालितदीनं भक्ताधीनं कर्मकरं
मोहनमतिधीरं फणिबलवीरं हतपरपीरं तरलतरं ।
वल्लभवजरमणं वारिजवदनं दलधरशमनं शैलधरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।६

जलधरद्युतिअङ्गं ललितत्रिभंगं बहुकृतिरंगं रसिकवरं
गोकुलपरिवारं मदनाकारं कुंजविहारं गूढनरम् ।
वल्लभवजचन्द्रं सुभगसुछन्दं परमानन्दं भ्रान्तिहरम्
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।७

वंदितयुगचरणं पावनकरणं जगदुद्धरणं विगलधरम्
कालियशिरगमनंकृतफणिनमनंघातितयमनंमृदुलतरं
वल्लभदुखहरणं निर्मलचरणं अशरणशरणं मुक्तिकरम्
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारंब्रह्मपरम् ।८

इति श्रीभाषाभूषितं श्रीनन्दकुमाराष्टकं सम्पूर्णम् ॥

अथ श्रीगिरिराजधार्यष्टकम्

भक्ताभिलाषाचरितानुसारी
दुग्धादिचौर्येण यशोविसारी।
कुमारतानंदितघोषनारी
मम प्रभुः श्रीगिरिराजधारी ॥ १ ॥

व्रजाङ्गनावृन्दसदाविहारी अङ्गैर्गुहाङ्गस्य तमोपहारी।
क्रीडारसावेषतमोभिसारी मम० ॥ २ ॥

वेणुस्वनानन्दितपन्नगारी रसातलानृत्यपदप्रचारी।
क्रीडन् वयस्याकृतिदैत्यमारी मम० ॥ ३ ॥

पुलिन्ददाराहितशम्बरारी रमासमोदारदयाप्रकारी।
गोवर्द्धने कन्दफलोपहारी मम० ॥ ४ ॥

कलिन्दजाकूलदुकूलहारी कुमारिकाकामकलाविहारी
वृन्दावने गोधनवृन्दचारी मम० ॥ ५ ॥

व्रजेन्द्रसर्वाधिकशर्मकारी महेन्द्रसर्वाधिकगर्वहारी।
वृन्दावने कन्दफलोपहारी मम० ॥ ६ ॥

मनःकलानाथतमोविदारी वंशीरवाकारिततत्कुमारिः।
रासोत्सवोद्वेल्लरसाब्धिसारी मम० ॥ ७ ॥

मत्तद्विपोद्दामगतानुकारी लुण्ठत्प्रसूनाप्रपदीनहारी।
रमारसस्पर्शकरप्रसारी मम० ॥ ८ ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं श्रीगिरिराज-
धार्यष्टकम्।

53

पूज्यपाद

षष्ठपीठाधीश्वर गो० श्री मुरलीधरलालजी महाराज

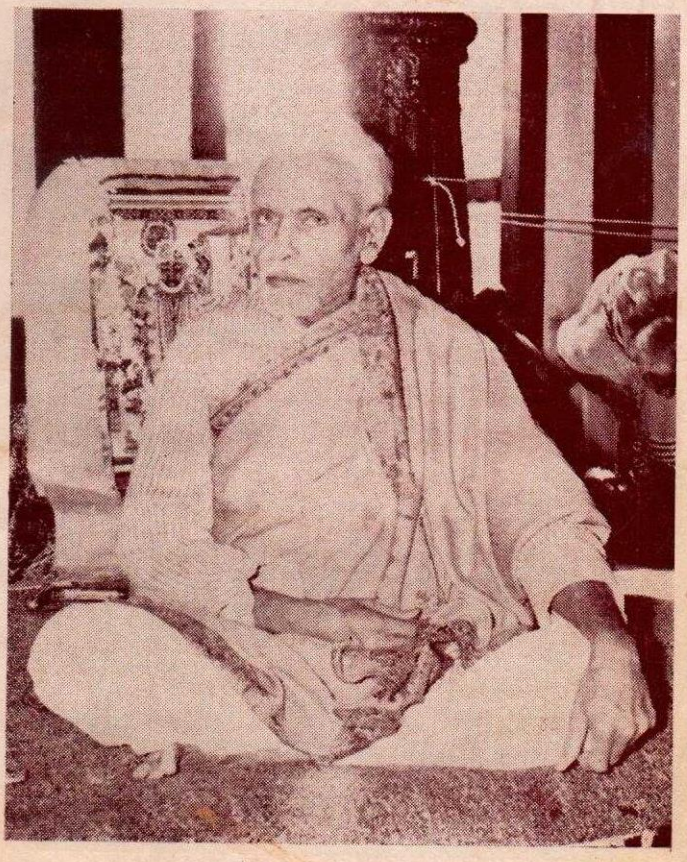

प्राकट्य
चैत्र शु० १३, सं० १९६१

लीला-प्रवेश
भाद्रपद कृ० ११, सं० २०३९

गो० श्री प्रेमप्रिया बहूजी महाराज

आप श्री शुद्धाद्वैत जप-यज्ञ समिति के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रेरणा-श्रोत हैं।

अथ श्रीकृष्णशरणाष्टकम्

सर्वसाधनहीनस्य पराधीनस्य सर्वतः।
पापपीनस्य दीनस्य श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ १ ॥
संसारसुखसंप्राप्तिसन्मुखस्य विशेषतः।
बहिर्मुखस्य सततं श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ २ ॥
सदा विषयकामस्य देहारामस्य सर्वथा।
दुष्टस्वभाववामस्य श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ३ ॥
संसारसर्पदष्टस्य धर्मभ्रष्टस्य दुर्मतेः।
लौकिकप्राप्तिकष्टस्य श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ४ ॥
विस्मृतस्वीयधर्मस्य कर्ममोहितचेतसः।
स्वरूपज्ञानशून्यस्य श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ५ ॥
संसारसिंधुमग्नस्य भग्नभावस्य दुष्कृतेः।
दुर्भावलग्नमनसः श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ६ ॥
विवेकधैर्यभक्त्यादिरहितस्य निरन्तरम्।
विरुद्धकरणासक्तेः श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ७ ॥
विषयाक्रांतदेहस्य वैमुख्यहतसन्मतेः।
इन्द्रियाश्वगृहीतस्य श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ८ ॥
एतदष्टकपाठेन ह्येतदुक्तार्थभावनात्।
निजाचार्यपदांभोजसेवकोदैन्यमाप्नुयात् ॥ ९ ॥

इति श्रीहरिदासविरचितं श्रीकृष्णशरणाष्टकं
सम्पूर्णम्।

वेणु गीतम्

श्रीशुक उवाच

इत्थं शरत्स्वच्छजलं पद्माकरसुगन्धिना ।
न्यविशद्वायुना वातं सगोगोपालकोऽच्युतः ॥ १ ॥
कुसुमितवनराजिशुष्मिभृङ्ग-
द्विजकुलघुष्टसरःसरिन्महीध्रम् ।
मधुपतिरवगाह्य चारयन् गाः
सह पशुपालबलश्चुकूज वेणुम् ॥ २ ॥
तद् व्रजस्त्रिय आश्रुत्य वेणुगीतं स्मरोदयम् ।
काश्चित्परोक्षं कृष्णस्य स्वसखीभ्योऽन्ववर्णयन् ॥३॥
तद् वर्णयितुमारब्धाः स्मरन्त्यः कृष्णचेष्टितम् ।
नाशकन् स्मरवेगेन विक्षिप्तमनसो नृप ॥ ४ ॥
बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं
बिभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम् ।
रन्ध्रान्वेणोरधरसुधया पूरयन्गोपवृन्दै-
र्वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्त्तिः ॥५
इति वेणुरवं राजन् सर्वभूतमनोहरम् ।
श्रुत्वा व्रजस्त्रियः सर्वाः वर्णयन्त्योऽभिरेभिरे ॥ ६ ॥
गोप्य ऊचुः
अक्षण्वतां फलमिदं न परं विदामः
सख्यः पशूननु विवेशयतोर्वयस्यैः ।
वक्त्रं व्रजेशसुतयोरनुवेणु जुष्टं
यैर्वा निपीतमनुरक्तकटाक्षमोक्षम् ॥ ७ ॥

सेवायां वा कथायां वा यस्यासक्तिर्दृढा भवेत् ।
यावज्जीवं तस्य नाशो न क्वापीति मतिर्मम ॥ ९ ॥

बाधसंभावनायां तु नैकान्ते वास इष्यते ।
हरिस्तु सर्वतो रक्षां करिष्यति न संशयः ॥१०॥

इत्येव भगवच्छास्त्रं गूढतत्त्वं निरूपितम् ।
य एतत्समधीयीत तस्यापि स्याद् दृढा रतिः ॥११॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचिता भक्तिवर्धिनी
समाप्ता ॥

अथ पंचपद्यानि

श्रीकृष्णरसविक्षिप्तमानसाऽरतिवर्जिताः ।
अनिर्वृता लोकवेदे ते मुख्याः श्रवणोत्सुकाः ॥ १ ॥

विक्लिन्नमनसो ये तु भगवत्स्मृतिविह्वलाः ।
अर्थैकनिष्ठास्ते चापि मध्यमाः श्रवणोत्सुकाः ॥ २ ॥

निःसन्दिग्धं कृष्णतत्त्वं सर्वभावेन ये विदुः ।
ते त्वावेशात्तु विकला निरोधाद्वा न चान्यथा ॥ ३ ॥

पूर्णभावेन पूर्णार्थाः कदाचिन्न तु सर्वदा ।
अन्यासक्तास्तु ये केचिदधमाः परिकीर्तिताः ॥ ४ ॥

अनन्यमनसो मर्त्या उत्तमाः श्रवणादिषु ।
देशकालद्रव्यकर्तृमन्त्रकर्मप्रकारतः ॥ ५ ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितानि पञ्चपद्यानि
समाप्तानि ॥

अथ सेवाफलम्

यादृशी सेवना प्रोक्ता तत्सिद्धौ फलमुच्यते ।
अलौकिकस्य दाने हि चाद्यः सिद्ध्येन्मनोरथः ॥१॥
फलं वा ह्यधिकारो वा न कालोऽत्र नियामकः ।
उद्वेगः प्रतिबन्धो वा भोगो वा स्यात्तु बाधकम् ॥२॥
अकर्तव्यं भगवतः सर्वथा चेद्गतिर्न हि ।
यथा वा तत्त्वनिर्द्धारो विवेकः साधनं मतम् ॥ ३ ॥
बाधकानां परित्यागो भोगेऽप्येकं तथापरम् ।
निष्प्रत्यूहं महान् भोगः प्रथमे विशते सदा ॥ ४ ॥
स विघ्नोऽल्पो घातकः स्याद्बलादेतौ सदा मतौ ।
द्वितीये सर्वथा चिंता त्याज्या संसारनिश्चयात् ॥५॥
नन्वाद्ये दातृता नास्ति तृतीये बाधकं गृहम् ।
अवश्येयं सदा भाव्यं सर्वमन्यन्मनोभ्रमः ॥ ६ ॥
तदीयैरपि तत्कार्यं पुष्टौ नैव विलम्बयेत् ।
गुणक्षोभेऽपि द्रष्टव्यमेतदेवेति मे मतिः ।
कुसृष्टिरत्र वा काचिदुत्पद्येत स वै भ्रमः ॥ ७ ॥
इति श्रीवल्लभाचार्यकृतं सेवाफलनिरूपणं समाप्तम् ॥

अथ श्रीमधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं
नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ १ ॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं
वसनं मधुरं वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ २ ॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः
पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ३ ॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं
भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ४ ॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं
हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ५ ॥
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा
यमुना मधुरा वीचिर्मधुरा ।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ६ ॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा
युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम् ।
इष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ७ ॥
गोपा मधुरा गावो मधुरा
यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ८ ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं मधुराष्टकं समाप्तम् ॥

अथ श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रम्

प्राकृतधर्मानाश्रयमप्राकृतनिखिलधर्मरूपमिति ।
निगमप्रतिपाद्यं यत्तच्छुद्धं साकृतिस्तौमि ॥ १ ॥

कलिकालतमश्छन्नदृष्टित्वाद्विदुषामपि ।
सम्प्रत्यविषयस्तस्य माहात्म्यं समभूद् भुवि ॥ २ ॥

दयया निजमाहात्म्यं करिष्यन् प्रकटं हरिः ।
वाण्या यदा तदा स्वास्यं प्रादुर्भूतं चकार हि ॥ ३ ॥

तदुक्तमपि दुर्बोधं सुबोधं स्याद्यथा तथा ।
तन्नामाष्टोत्तरशतं प्रवक्ष्याम्यखिलाघहृत् ॥ ४ ॥

ऋषिरग्निकुमारस्तु नाम्नां छन्दो जगत्यसौ ।
श्रीकृष्णाऽस्यं देवता च बीजं कारुणिकः प्रभुः ॥ ५ ॥

विनियोगो भक्तियोगप्रतिबन्धविनाशने ।
कृष्णाधरामृतास्वादसिद्धिरत्र न संशयः ॥ ६ ॥

आनन्दः परमानन्दः श्रीकृष्णास्यं कृपानिधिः ।
दैवोद्धारप्रयत्नात्मा स्मृतिमात्रार्तिनाशनः ॥ ७ ॥

श्रीभागवतगूढार्थप्रकाशनपरायणः ।
साकारब्रह्मवादैकस्थापको वेदपारगः ॥ ८ ॥

जगद्गुरु श्री वल्लभाचार्यजी

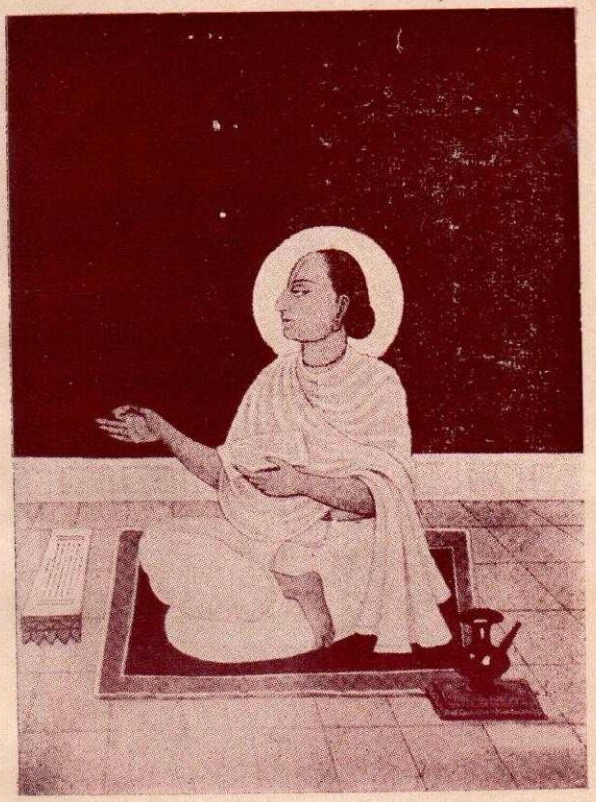

आनन्दः परमानन्दः श्रीकृष्णस्यं कृपानिधिः ।
दैवोद्धारप्रयत्नात्मा स्मृतिमात्रार्तिनाशनः ।।

मायावादनिराकर्ता सर्ववादिनिरासकृत् ।
भक्तिमार्गाब्जमार्तण्डः स्त्रीशूद्राद्युद्धृतिक्षमः ॥ ९ ॥
अङ्गीकृत्यैव गोपीशवल्लभीकृतमानवः ।
अङ्गीकृतौ समर्यादो महाकारुणिको विभुः ॥१०॥
अदेयदानदक्षश्च महोदारचरित्रवान् ।
प्राकृतानुकृतिव्याजमोहितासुरमानुषः ॥११॥
वैश्वानरो वल्लभाख्यः सद्रूपोहितकृत्सताम् ।
जनशिक्षाकृते कृष्णभक्तिकृन्निखिलेष्टदः ॥१२॥
सर्वलक्षणसम्पन्नः श्रीकृष्णज्ञानदो गुरुः ।
स्वानन्दतुन्दिलः पद्मदलायतविलोचनः ॥१३॥
कृपादृग्वृष्टिसंहृष्टदासदासीप्रियः पतिः ।
रोषदृक्पातसंप्लुष्टभक्तद्विड् भक्तसेवितः ॥१४॥
सुखसेव्यो दुराराध्यो दुर्लभांघ्रिसरोरुहः ।
उग्रप्रतापो वाक्सीधुपूरिताशेषसेवकः ॥१५॥
श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षमः ।
तत्सारभूतरासस्त्रीभावपूरितविग्रहः ॥१६॥
सान्निध्यमात्रदत्तश्रीकृष्णप्रेमा विमुक्तिदः ।
रासलीलैकतात्पर्यः कृपयैतत्कथाप्रदः ॥१७॥
विरहानुभवैकार्थसर्वत्यागोपदेशकः ।
भक्त्याचारोपदेष्टा च कर्ममार्गप्रवर्तकः ॥१८॥

यागादौ भक्तिमार्गैकसाधनत्वोपदेशकः ।
पूर्णानन्दः पूर्णकामो वाक्पतिर्विबुधेश्वरः ॥१९॥
कृष्णनामसहस्रस्य वक्ता भक्तपरायणः ।
भक्त्याचारोपदेशार्थनानावाक्यनिरूपकः ॥२०॥
स्वार्थोज्झिताखिलप्राणप्रियस्तादृशवेष्टितः ।
स्वदासार्थकृताशेषसाधनः सर्वशक्तिधृक् ॥ २१ ॥
भुवि भक्तिप्रचारैककृते स्वान्वयकृत्पिता ।
स्ववंशे स्थापिताशेषस्वमाहात्म्यः स्मयापहः ॥२२॥
पतिव्रतापतिः पारलौकिकैहिकदानकृत् ।
निगूढहृदयोऽनन्यभक्तेषु ज्ञापिताशयः ॥२३॥
उपासनादिमार्गातिमुग्धमोहनिवारकः ।
भक्तिमार्गे सर्वमार्गवैलक्षण्यानुभूतिकृत् ॥२४॥
पृथक्शरणमार्गोपदेष्टा श्रीकृष्णहार्दवित् ।
प्रतिक्षणनिकुञ्जस्थलीलारससुपूरितः ॥२५॥
तत्कथाक्षिप्तचित्तस्तद्विस्मृतान्यो व्रजप्रियः ।
प्रियव्रजस्थितिः पुष्टिलीलाकर्ता रहःप्रियः ॥२६॥
भक्तेच्छापूरकः सर्वाज्ञातलीलोऽतिमोहनः ।
सर्वासक्तो भक्तमात्रासक्तः पतितपावनः ॥२७॥
स्वयशोगानसंहृष्टहृदयाम्भोजविष्टरः ।
यशःपीयूषलहरीप्लावितान्यरसः परः ॥२८॥

लीलामृतरसार्द्रार्द्रीकृताखिलशरीरभृत् ।
गोवर्धनस्थित्युत्साहस्तल्लीलाप्रेमपूरितः ॥२९॥

यज्ञभोक्ता यज्ञकर्ता चतुर्वर्गविशारदः ।
सत्यप्रतिज्ञस्त्रिगुणातीतो नयविशारदः ॥३०॥

स्वकीर्तिवर्धनस्तत्त्वसूत्रभाष्यप्रदर्शकः ।
मायावादाख्यतूलाग्निर्ब्रह्मवादनिरूपकः ॥३१॥

अप्राकृताऽखिलाकल्पभूषितः सहजस्मितः ।
त्रिलोकीभूषणं भूमिभाग्यं सहजसुन्दरः ॥३२॥

अशेषभक्तसम्प्रार्थ्यचरणाब्जरजोधनः ।
इत्यानन्दनिधेः प्रोक्तं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥३३॥

श्रद्धाविशुद्धबुद्धिर्यः पठत्यनुदिनं जनः ।
स तदेकमनाः सिद्धिमुक्तां प्राप्नोत्यसंशयम् ॥३४॥

तदप्राप्तौ वृथा मोक्षस्तदाप्तौ तद्गतार्थता ।
अतः सर्वोत्तमस्तोत्रं जप्यं कृष्णरसार्थिभिः ॥३५॥

इति श्रीमदग्निकुमारप्रोक्तं सर्वोत्तमस्तोत्रं
संपूर्णम् ॥

अथ नन्दकुमाराष्टकम्

सुंदरगोपालम् उरवनमालम् नयनविशालं दुःखहरं
वृन्दावनचन्द्रम् आनंदकन्दं परमानन्दं धरणिधरम् ।
वल्लभघनश्यामं पूर्णकामं अत्यभिरामं प्रीतिकरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम् ।१

सुन्दरवारिजवदनं निर्जितमदनं आनन्दसदनं मुकुटधरं
गुञ्जाकृतिहारं विपिनविहारं परमोदारं चीरहरम् ।
वल्लभपटपीतं कृतमुपवीतं करनवनीतं विबुधवरम्
भजनन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।२।

शोभितमुखधूलं यमुनाकूलं निपट अतूलं सुखदतरम्
मुखमण्डितरेणुं चारितधेनुं वाजितवेणुं मधुरसुरम् ।
वल्लभअतिविमलंशुभपदकमलं नखरुचिअमलंतिमिरहरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।३

शिरमुकुटसुदेशं कुञ्चितकेशं नटवरवेषं कामवरं
मायाकृतमनुजं हलधरसहजं प्रतिहतदनुजं भारहरम्
वल्लभवजपालं सुभगसुचालं हितमनुकालं भाववरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।४

इन्दीवरभासं प्रकटसरासं कुसुमविकासं वंशिधरं
जितमन्मथमानं रूपनिधानं कृतकलगानं चित्तहरम् ।
वल्लभमृदुहासं कुञ्जनिवासं विविधविलासं केलिकरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।५

अतिपरमप्रवीणं पालितदीनं भक्ताधीनं कर्मकरं
मोहनमतिधीरं फणिबलवीरं हतपरपीरं तरलतरं ।
वल्लभव्रजरमणं वारिजवदनं दलधरशमनं शैलधरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।६

जलधरद्युतिअङ्गं ललितत्रिभंगं बहुकृतिरंगं रसिकवरं
गोकुलपरिवारं मदनाकारं कुंजविहारं गूढनरम् ।
वल्लभव्रजचन्द्रं सुभगसुछन्दं परमानन्दं भ्रान्तिहरम्
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम् ।७

वंदितयुगचरणं पावनकरणं जगदुद्धरणं विगलधरम्
कालियशिरगमनंकृतफणिनमनंघातितयमनंमृदुलतरं
वल्लभदुखहरणं निर्मलचरणं अशरणशरणं मुक्तिकरम्
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारंब्रह्मपरम् ।८

इति श्रीभाषाभूषितं श्रीनन्दकुमाराष्टकं सम्पूर्णम् ॥

70

अथ श्रीगिरिराजधार्यष्टकम्

भक्ताभिलाषाचरितानुसारी
दुग्धादिचौर्येण यशोविसारी।
कुमारतानंदितघोषनारी
मम प्रभुः श्रीगिरिराजधारी ॥ १ ॥
व्रजाङ्गनावृन्दसदाविहारी अङ्गैर्गुहाङ्गस्य तमोपहारी।
क्रीडारसावेषतमोभिसारी मम० ॥ २ ॥
वेणुस्वनानन्दितपन्नगारी रसातलानृत्यपदप्रचारी।
क्रीडन् वयस्याकृतिदैत्यमारी मम० ॥ ३ ॥
पुलिन्ददाराहितशम्बरारी रमासमोदारदयाप्रकारी।
गोवर्द्धने कन्दफलोपहारी मम० ॥ ४ ॥
कलिन्दजाकूलदुकूलहारी कुमारिकाकामकलावितारी
वृन्दावने गोधनवृन्दचारी मम० ॥ ५ ॥
व्रजेन्द्रसर्वाधिकशर्मकारी महेन्द्रसर्वाधिकगर्वहारी।
वृन्दावने कन्दफलोपहारी मम० ॥ ६ ॥
मनःकलानाथतमोविदारी वंशीरवाकारितितत्कुमारिः।
रासोत्सवोद्वेल्लरसाब्धिसारी मम० ॥ ७ ॥
मत्तद्विपोद्दामगतानुकारी लुण्ठत्प्रसूनाप्रपदीनहारी।
रमारसस्पर्शकरप्रसारी मम० ॥ ८ ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं श्रीगिरिराज-
धार्यष्टकम्।

71

पूज्यपाद

षष्ठपीठाधीश्वर गो० श्री मुरलीधरलालजी महाराज

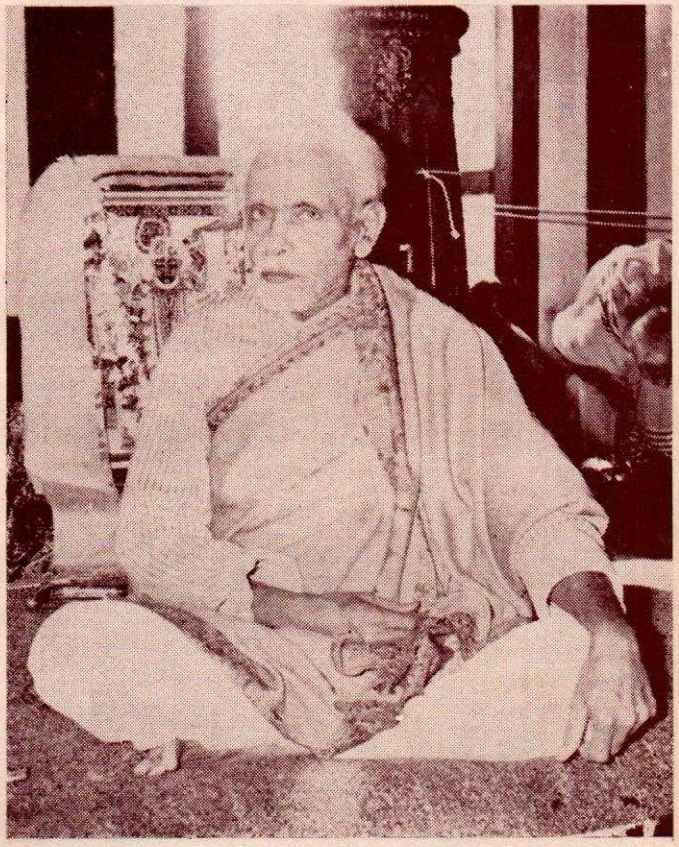

प्राकट्य
चैत्र शु० १३, सं० १९६१

लीला-प्रवेश
भाद्रपद कृ० ११, सं० २०३९

गो० श्री प्रेमप्रिया बहूजी महाराज

आप श्री शुद्धाद्वैत जप-यज्ञ समिति के आध्यात्मिक एवं
सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रेरणा-श्रोत हैं।

अथ श्रीकृष्णशरणाष्टकम्

सर्वसाधनहीनस्य पराधीनस्य सर्वतः ।
पापपीनस्य दीनस्य श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ १ ॥
संसारसुखसंप्राप्तिसन्मुखस्य विशेषतः ।
बहिर्मुखस्य सततं श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ २ ॥
सदा विषयकामस्य देहारामस्य सर्वथा ।
दुष्टस्वभाववामस्य श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ३ ॥
संसारसर्पदष्टस्य धर्मभ्रष्टस्य दुर्मतेः ।
लौकिकप्राप्तिकष्टस्य श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ४ ॥
विस्मृतस्वीयधर्मस्य कर्ममोहितचेतसः ।
स्वरूपज्ञानशून्यस्य श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ५ ॥
संसारसिंधुमग्नस्य भग्नभावस्य दुष्कृतेः ।
दुर्भावलग्नमनसः श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ६ ॥
विवेकधैर्यभक्त्यादिरहितस्य निरन्तरम् ।
विरुद्धकरणासक्तेः श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ७ ॥
विषयाक्रांतदेहस्य वैमुख्यहतसन्मतेः ।
इन्द्रियाश्वगृहीतस्य श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ ८ ॥
एतदष्टकपाठेन ह्येतदुक्तार्थभावनात् ।
निजाचार्यपदांभोजसेवकोदैन्यमाप्नुयात् ॥ ९ ॥

इति श्रीहरिदासविरचितं श्रीकृष्णशरणाष्टकं
सम्पूर्णम् ।

वेणु गीतम्

श्रीशुक उवाच

इत्थं शरत्स्वच्छजलं पद्माकरसुगन्धिना ।
न्यविशद्वायुना वातं सगोगोपालकोऽच्युतः ॥ १ ॥
कुसुमितवनराजिशुष्मिभृङ्ग-
द्विजकुलघुष्टसरःसरिन्महीध्रम् ।
मधुपतिरवगाह्य चारयन् गाः
सह पशुपालबलश्चुकूज वेणुम् ॥ २ ॥
तद् व्रजस्त्रिय आश्रुत्य वेणुगीतं स्मरोदयम् ।
काश्चित्परोक्षं कृष्णस्य स्वसखीभ्योऽन्ववर्णयन् ॥३॥
तद् वर्णयितुमारब्धाः स्मरन्त्यः कृष्णचेष्टितम् ।
नाशकन् स्मरवेगेन विक्षिप्तमनसो नृप ॥ ४ ॥
बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं
बिभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम् ।
रन्ध्रान्वेणोरधरसुधया पूरयन्गोपवृन्दै-
र्वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्त्तिः ॥५
इति वेणुरवं राजन् सर्वभूतमनोहरम् ।
श्रुत्वा व्रजस्त्रियः सर्वाः वर्णयन्त्योऽभिरेभिरे ॥ ६ ॥
गोप्य ऊचुः
अक्षण्वतां फलमिदं न परं विदामः
सख्यः पशूननु विवेशयतोर्वयस्यैः ।
वक्त्रं व्रजेशसुतयोरनुवेणु जुष्टं
यैर्वा निपीतमनुरक्तकटाक्षमोक्षम् ॥ ७ ॥

चूतप्रवालबर्हस्तबकोत्पलाब्ज-
मालानुपृक्तपरिधानविचित्रवेषौ ।
मध्ये विरेजतुरलं पशुपालगोष्ठ्यां
रङ्गे यथा नटवरौ क्व च गायमानौ ॥ ८ ॥

गोप्यः किमाचरदयं कुशलं स्म वेणु-
र्दामोदराधरसुधामपि गोपिकानाम् ।
भुङ्क्ते स्वयं यदवशिष्टरसं हृदिन्यो
हृष्यत्त्वचोश्रु मुमुचुस्तरवो यथार्याः ॥९॥

वृन्दावनं सखि भुवो वितनोति कीर्तिं
यद्देवकीसुतपदाम्बुजलब्धलक्ष्मि ।
गोविन्दवेणुमनु मत्तमयूरनृत्यं
प्रेक्ष्याद्रिसान्वपरतान्यसमस्तसत्त्वम् ॥१०॥

धन्याः स्म मूढमतयोऽपि हरिण्य एता
या नन्दनन्दनमुपात्तविचित्रवेषम् ।
आकर्ण्य वेणुरणितं सहकृष्णसाराः
पूजां दधुर्विरचितां प्रणयावलोकैः ॥११॥

कृष्णं निरीक्ष्य वनितोत्सवरूपशीलं
श्रुत्वा च तत्कणितवेणुविचित्रगीतम् ।
देव्यो विमानगतयः स्मरनुन्नसारा
भ्रश्यत्प्रसूनकबरा मुमुहुर्विनीव्यः ॥१२॥

गावश्च कृष्णमुखनिर्गतवेणुगीत-
पीयूषमुत्तंभितकर्णपुटैः पिबन्त्यः ।
शावाः स्नुतस्तनपयःकवलाः स्म तस्थु-
र्गोविन्दमात्मनि दृशाश्रुकलाः स्पृशन्त्यः ॥१३॥
प्रायो बताम्ब विहगा मुनयो वनेऽस्मिन्
कृष्णेक्षितं तदुदितं कलवेणुगीतम् ।
आरुह्य ये द्रुमभुजान् रुचिरप्रवालान्
शृण्वन्ति मीलितदृशो विगतान्यवाचः ॥ १४ ॥
नद्यस्तदा तदुपधार्य मुकुन्दगीत-
मावर्त्तलक्षितमनोभवभग्नवेगाः ।
आलिङ्गनस्थगितमूर्मिभुजैर्मुरारे-
र्गृह्णन्ति पादयुगलं कमलोपहाराः ॥ १५ ॥
दृष्ट्वातपे व्रजपशून् सहरामगोपैः
सञ्चारयन्तमनु वेणुमुदीरयन्तम् ।
प्रेमप्रवृद्ध उदितः कुसुमावलीभिः
सख्युर्व्यधात् स्ववपुषाम्बुद आतपत्रम् ॥१६॥
पूर्णाः पुलिन्द्य उरुगायपदाब्जराग-
श्रीकुङ्कुमेन दयितास्तनमण्डितेन ।
तद्दर्शनस्मररुजस्तृणरूषितेन
लिम्पन्त्य आननकुचेषु जहुस्तदाधिम् ॥ १७ ॥

गावश्च कृष्णमुखनिर्गतवेणुगीत-
पीयूषमुत्तंभितकर्णपुटैः पिबन्त्यः ।
शावाः स्नुतस्तनपयःकवलाः स्म तस्थु-
र्गोविन्दमात्मनि दृशाश्रुकलाः स्पृशन्त्यः ॥१३॥

प्रायो बताम्ब विहगा मुनयो वनेऽस्मिन्
कृष्णेक्षितं तदुदितं कलवेणुगीतम् ।
आरुह्य ये द्रुमभुजान् रुचिरप्रवालान्
शृण्वन्ति मीलितदृशो विगतान्यवाचः ॥ १४ ॥

नद्यस्तदा तदुपधार्य मुकुन्दगीत-
मावर्त्तलक्षितमनोभवभग्नवेगाः ।
आलिङ्गनस्थगितमूर्मिभुजैर्मुरारे-
र्गृह्णन्ति पादयुगलं कमलोपहाराः ॥ १५ ॥

दृष्ट्वातपे व्रजपशून् सहरामगोपैः
सञ्चारयन्तमनु वेणुमुदीरयन्तम् ।
प्रेमप्रवृद्ध उदितः कुसुमावलीभिः
सख्युर्व्यधात् स्ववपुषाम्बुद आतपत्रम् ॥१६॥

पूर्णाः पुलिन्द्य उरुगायपदाब्जराग-
श्रीकुङ्कुमेन दयितास्तनमण्डितेन ।
तद्दर्शनस्मररुजस्तृणरूषितेन
लिम्पन्त्य आननकुचेषु जहुस्तदाधिम् ॥ १७ ॥

(78)

चूतप्रवालबर्हस्तबकोत्पलाब्ज-
मालानुपृक्तपरिधानविचित्रवेषौ ।
मध्ये विरेजतुरलं पशुपालगोष्ठ्यां
रङ्गे यथा नटवरौ क च गायमानौ ॥ ८ ॥

गोप्यः किमाचरदयं कुशलं स्म वेणु-
र्दामोदराधरसुधामपि गोपिकानाम् ।
भुङ्क्ते स्वयं यदवशिष्टरसं हृदिन्यो
हृष्यत्त्वचोश्रु मुमुचुस्तरवो यथार्याः ॥९॥

वृन्दावनं सखि भुवो वितनोति कीर्तिं
यद्देवकीसुतपदाम्बुजलब्धलक्ष्मि ।
गोविन्दवेणुमनु मत्तमयूरनृत्यं
प्रेक्ष्याद्रिसान्वपरतान्यसमस्तसत्त्वम् ॥१०॥

धन्याः स्म मूढमतयोऽपि हरिण्य एता
या नन्दनन्दनमुपात्तविचित्रवेषम् ।
आकर्ण्य वेणुरणितं सहकृष्णसाराः
पूजां दधुर्विरचितां प्रणयावलोकैः ॥११॥

कृष्णं निरीक्ष्य वनितोत्सवरूपशीलं
श्रुत्वा च तत्कणितवेणुविचित्रगीतम् ।
देव्यो विमानगतयः स्मरनुन्नसारा
भ्रश्यत्प्रसूनकबरा मुमुहुर्विनीव्यः ॥१२॥

हन्तायमद्रिरबला हरिदासवर्यो
यद्रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः ।
मानं तनोति सह गोगणयोस्तयोर्यत्-
पानीय सूयवसकन्दरकन्दमूलैः ॥ १८ ॥

गा गोपकैरनुवनं नयतोरुदार-
वेणुस्वनैः कलपदैस्तनुभृत्सु सख्यः ।
अस्पन्दनं गतिमतां पुलकस्तरूणां
निर्योगपाशकृतलक्षणयोर्विचित्रम् ॥ १९ ॥

एवं विधा भगवतो या वृन्दावनचारिणः ।
वर्णयन्त्यो मिथो गोप्यः क्रीडास्तन्मयतां ययुः ॥२०॥

इति श्रीशुकप्रोक्तं वेणुगीतं समाप्तम् ।

गोपीगीतम्

गोप्य ऊचुः

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका-
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥ १ ॥

शरदुदाशये साधुजातसत्-
सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका।
वरद निघ्नतो नेह किं वधः ॥ २ ॥

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद्
वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभया-
दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥ ३ ॥

न खलु गोपिकानन्दनो भवा-
नखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थिनो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ॥ ४ ॥

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते
चरणमीयुषां संसृतेर्भयात् ।
करसरोरुहं कान्त कामदं
शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥ ५ ॥

व्रजजनार्त्तिहन् वीर योषितां
निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत्किङ्करीः स्म नो
जलरुहाननं चारु दर्शय ॥ ६ ॥

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं
तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं
कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥ ७ ॥

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया
बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यती-
रधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ॥ ८ ॥

तव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥ ९ ॥

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं
विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः
कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥ १० ॥

चलसि यद्व्रजाच्चारयन् पशून्
नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः
कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥ ११ ॥

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलै-
र्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।
घनरजस्वलं दर्शयन् मुहु-
र्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥ १२ ॥

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं
धरणिमण्डनं ध्येयमापदि ।
चरणपङ्कजं शन्तमं च ते
रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥ १३ ॥

सुरतवर्धनं शोकनाशनं
स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतररागविस्मारणं नृणां
वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥ १४ ॥

अटति यद्भवानह्नि काननं
त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते
जड़ उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ॥ १५ ॥
पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवा-
नतिविलङ्घ्यतेऽन्त्यच्युतागताः ।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः
कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥ १६ ॥
रहसि संविदं हृच्छयोदयं
प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।
बृहदुरःश्रियो वीक्ष्य धाम ते
मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥ १७ ॥
व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते
वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् ।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां
स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥ १८ ॥
यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताः शनैः प्रियदधीमहि कर्कशेषु ।
तेनाटवीमटसि तत् व्यथते न किंस्वित्
कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥१९॥

इति गोपीगीतं समाप्तम् ।

युगलगीतम्

श्रीशुक उवाच

गोप्यः कृष्णे वनं याते तमनुद्रुतचेतसः।
कृष्णलीलाः प्रगायन्त्यो निन्युर्दुःखेन वासरान् ॥ १॥

गोप्य ऊचुः

वामबाहुकृतवामकपोलो
वल्गितभ्रुरधरार्पितवेणुम्।
कोमलाङ्गुलिभिराश्रितमार्गं
गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥ २ ॥

व्योमयानवनिताः सह सिद्धै-
र्विस्मितास्तदुपधार्य सलज्जाः।
काममार्गणसमर्पितचित्ताः
कश्मलं ययुरपस्मृतनीव्यः ॥ ३ ॥

हन्त चित्रमबलाः शृणुतेदं
हारहास उरसि स्थिरविद्युत्।
नन्दसूनुरयमार्त्तजनानां
नर्मदो यर्हि कूजितवेणुः ॥ ४ ॥

वृन्दशो व्रजवृषा मृगशावो
वेणुवाद्यहृतचेतस आरात्।
दन्तदष्टकवला धृतकर्णा
निद्रिता लिखितचित्रमिवासन् ॥ ५ ॥

बर्हिणस्तबकधातुपलाशै-
र्बद्धमल्लपरिबर्हविडम्बः

कर्हिचित्सबल आलि स गोपै-
गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्दः ॥ ६ ॥
तर्हि भग्नगतयः सरितो वै
तत्पदाम्बुजरजोऽनिलनीतम् ।
स्पृहयतीर्वयमिवाबहुपुण्याः
प्रेमवेपितभुजाः स्तिमितापः ॥ ७ ॥
अनुचरैः समनुवर्णितवीर्य
आदिपूरुष इवाचलभूतिः ।
वनचरो गिरितटेषु चरन्ती-
र्वेणुनाऽऽह्वयति गाः स यदा हि ॥ ८ ॥
वनलतास्तरव आत्मनि विष्णुं
व्यञ्जयन्त्य इव पुष्पफलाढ्याः ।
प्रणतभारविटपा मधुधाराः
प्रेमहृष्टतनवः ससृजुः स्म ॥ ९ ॥
दर्शनीयतिलको वनमाला-
दिव्यगन्धतुलसीमधुमत्तैः ।
अलिकुलैरलघुगीतमभीष्ट-
मादियन् यर्हि सन्धितवेणुः ॥ १० ॥
सरसि सारसहंसविहङ्गा-
श्चारुगीतहृतचेतस एत्य ।

हरिमुपासत ते यतचित्ता
हन्त मीलितदृशो धृतमौनाः ॥ ११ ॥
सहबलः सगवतंसविलासः
सानुषु क्षितिभृतो व्रजदेव्यः ।
हर्षयन् यर्हि वेणुरवेण
जातहर्षं उपरम्भति विश्वम् ॥ १२ ॥
महदतिक्रमणशङ्कितचेता
मन्दमन्दमनुगर्जति मेघः ।
सुहृदमभ्यवर्षत् सुमनोभि-
श्छायया च विदधत् प्रतपत्रम् ॥ १३ ॥
विविधगोपचरणेषु विदग्धो
वेणुवाद्य उरुधा निजशिक्षाः ।
तव सुतः सति यदाधरबिम्बे
दत्तवेणुरनयत्स्वरजातीः ॥ १४ ॥
सवनशस्तदुपधार्य सुरेशाः
शक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ।
कवय आनतकन्धरचित्ताः
कश्मलं ययुरनिश्चिततत्त्वाः ॥ १५ ॥
निजपदाब्जदलैर्ध्वजवज्र-
नीरजाङ्कुशविचित्रललामैः ।

व्रजभुवः शमयन् खुरतोदं
वर्ष्मधुर्यगतिरीडितवेणुः ॥ १६ ॥
व्रजति तेन वयं सविलास-
वीक्षणार्पितमनोभववेगाः ।
कुजगतिं गमिता न विदामः
कश्मलेन कबरं वसनं वा ॥ १७ ॥
मणिधरः क्वचिदागणयन् गा
मालया दयितगन्धतुलस्याः ।
प्रणयिनोऽनुचरस्य कदांसे
प्रक्षिपन् भुजमगायत यत्र ॥ १८ ॥
क्वणितरेणुरववञ्चितचित्ताः
कृष्णमन्वसत कृष्णगृहिण्यः ।
गुणगणार्णमनुगत्य हरिण्यो
गोपिका इव विमुक्तगृहाशाः ॥ १९ ॥
कुन्ददामकृतकौतुकवेषो
गोपगोधनवृतो यमुनायाम् ।
नन्दसूनुरनघे तव वत्सो
नर्मदः प्रणयिनां विजहार ॥ २० ॥
मन्दवायुरुपवात्यनुकूलं
मानयन् मलयजस्पर्शेन ।
वन्दिनस्तमुपदेवगणा ये
वाद्यगीतबलिभिः परिवव्रुः ॥ २१ ॥

(88)

वत्सलो व्रजगवां यदगध्रो
वन्द्यमानचरणः पथि वृद्धैः ।
कृत्स्नगोधनमुपोह्य दिनान्ते
गीतवेणुरनुगेडितकीर्तिः ॥ २२ ॥
उत्सवं श्रमरुचापि दृशीना-
मुन्नयन् खुररजश्छुरितस्रक् ।
दित्सयैति सुहृदाशिष एष
देवकीजठरभूरुडुराजः ॥ २३ ॥
मदविघूर्णितलोचन ईष-
न्मानदः स्वसुहृदां वनमाली ।
बदरपाण्डुवदनो मृदुगण्डं
मण्डयन् कनककुण्डललक्ष्म्या ॥ २४ ॥
यदुपतिर्द्विरदराजविहारो
यामिनीपतिरिवैष दिनान्ते ।
मुदितवक्त्र उपयाति दुरन्तं
मोचयन् व्रजगवां दिनतापम् ॥ २५ ॥
श्रीशुक उवाच
एवं व्रजस्त्रियो राजन् कृष्णलीला नु गायतीः ।
रेमिरेऽहःसु तच्चित्तास्तन्मनस्का महोदयाः ॥ २६ ॥
इति श्रीयुगलगीतं सम्पूर्णम् ।

भ्रमरगीतम्

गोप्युवाच

मधुप कितवबन्धो मा स्पृशाङ्घ्रिं सपत्न्याः
कुचविलुलितमालाकुङ्कुमश्मश्रुभिर्नः ।
बहतु मधुपतिस्तन्मानिनीनां प्रसादं
यदुसदसि विडम्ब्यं यस्य दूतस्त्वमीदृक् ॥ १ ॥

सकृदधरसुधां स्वां मोहिनीं पाययित्वा
सुमनस इव सद्यस्तत्यजेऽस्मान् भवादृक् ।
परिचरति कथं तत्पादपद्मं तु पद्मा
ह्यपि बत हृतचेता उत्तमश्लोकजल्पैः ॥ २ ॥

किमिह बहु षडङ्घ्रे गायसि त्वं यदूना-
मधिपतिमगृहाणामग्रतो नः पुराणम् ।
विजयसखसखीनां गीयतां तत्प्रसङ्गः
क्षपितकुचरुजस्ते कल्पयन्तीष्टमिष्टाः ॥ ३ ॥

दिवि भुवि च रसायां काः स्त्रियस्तद्दुरापाः
कपटरुचिरहासभ्रूविजम्भस्य याः स्युः ।
चरणरज उपास्ते यस्य भूतिर्वयं का
अपि च कृपणपक्षे ह्युत्तमश्लोकशब्दः ॥ ४ ॥

विसृज शिरसि पादं वेद्म्यहं चाटुकारै-
रनुनयविदुषस्तेऽभ्येत्य दौत्यैर्मुकुन्दात् ।
स्वकृत इह विसृष्टापत्यपत्यन्यलोका
व्यसृजदकृतचेताः किं नु सन्धेयमस्मिन् ॥ ५ ॥

(५०)

मृगयुरिव कपीन्द्रं विव्यधे लुब्धधर्मा
स्त्रियमकृत विरूपां स्त्रीजितः कामयानाम् ।
बलिमपि बलिमत्त्वावेष्टयद् ध्वाङ्क्षवद् य-
स्तदलमसितसख्यैर्दुस्त्यजस्तत्कथार्थः ॥ ६ ॥
यदनुचरितलीलाकर्णपीयूषविप्रुट्
सकृददनविधूतद्वन्द्वधर्मा विनष्टाः ।
सपदि गृहकुटुम्बं दीनमुत्सृज्य दीना
बहव इह विहङ्गा भिक्षुचर्यां चरन्ति ॥ ७ ॥
वयमृतमिव जिह्मव्याहृतं श्रद्दधानाः
कुलिकरुतमिवाज्ञाः कृष्णवध्वो हरिण्यः ।
ददृशुरसकृदेतत्तन्नखस्पर्शतीव्र-
स्मररुज उपमन्त्रिन् भण्यतामन्यवार्त्ता ॥८॥
प्रियसख पुनरागाः प्रेयसा प्रेषितः किं
वरय किमनुरुन्धे माननीयोऽसि मेऽङ्ग ।
नयसि कथमिहास्मान् दुस्त्यजद्वन्द्वपार्श्वं
सततमुरसि सौम्य श्रीर्वधूः साकमास्ते ॥९॥
अपि बत मधुपुर्यामार्यपुत्रोऽधुनास्ते
स्मरति स पितृगेहान् सौम्य बन्धूंश्च गोपान् ।
क्वचिदपि स कथा नः किङ्करीणां गृणीते
भुजमगुरुसुगन्धं मूर्ध्न्यधास्यत् कदा नु ॥१०॥
इति भ्रमरगीतं सम्पूर्णम् ।

श्रीविट्ठलेशस्तुति

परम कृपालु श्रीवल्लभनन्दन,
करत कृपा निज हाथ दे माथ।
जे जन शरण आये अनुसरही,
ग्रही सोंपत श्रीगोवर्धननाथ॥
परम उदार चतुर चिन्तामणि,
राखत भवधारा वह्यो जात।
भज कृष्णदास काज सब सरहीं,
जो जाने श्रीविट्ठलनाथ॥

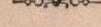

आश्रय के पद

भरोसो दृढ इन चरणन केरो।
श्रीवल्लभ नखचन्द्र छटा बिनु
सब जग मांझ अंधेरो।
साधन और नाहिं या कलि में,
जासों होय निवेरो।
सूर कहा कहै द्विविध आंधरो,
बिना मोल को चेरो॥

चतुःश्लोकी भागवत

अहमेवासमेवाग्रं नान्यद्यत्सदसत्परम् ।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥१॥

ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि ।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः ॥२॥

यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु ।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम् ॥ ३ ॥

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः ।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात् सर्वत्र सर्वदा ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्भागवतस्था चतुःश्लोकी समाप्ता ।

वृत्रचतुःश्लोकी

अहं हरे ! तव पादैकमूल-
दासानुदासो भविताऽस्मि भूयः ।
मनः स्मरेतासुपतेर्गुणांस्ते
गृहीतवाक् कर्म करोतु कायः ॥ १ ॥

न नाकपृष्ठं न च पारमेष्ठ्यं
न सार्वभौमं न रसाधिपत्यम् ।
न योगसिद्धीरपुनर्भवं वा
समञ्जस ! त्वा विरहय्य काङ्क्षे ॥ २ ॥

अजातपक्षा इव मातरं खगाः
स्तन्यं यथा वत्सतराः क्षुधार्त्ताः ।
प्रियं प्रियेव व्युषितं विषण्णा
मनोऽरविन्दाक्ष ! दिदृक्षते त्वाम् ॥ ३ ॥

ममोत्तमश्लोकजनेषु सख्यं
संसारचक्रे भ्रमतः स्वकर्मभिः ।
त्वन्माययाऽऽत्मात्मजदारगेहे-
ष्वासक्तचित्तस्य न नाथ ! भूयात् ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्भागवतस्था वृत्रासुरचतुःश्लोकी समाप्ता ।

श्रीविट्ठलेशकृता चतुःश्लोकी

सदा सर्वात्मभावेन भजनीयो व्रजेश्वरः ।
करिष्यति स एवास्मदैहिकं पारलौकिकम् ॥ १ ॥

अन्याश्रयो न कर्तव्यः सर्वथा बाधकस्तु सः ।
स्वकीये स्वात्मभावाच्च कर्तव्यः सर्वथा सदा ॥ २ ॥

सदा सर्वात्मना कृष्णः सेव्यः कालादिदोषनुत् ।
तद्भक्तेषु च निर्दोषभावेन स्थेयमादरात् ॥ ३ ॥

भगवत्येव सततं स्थापनीयं मनः स्वयम् ।
कालोऽयं कठिनोऽपि श्रीकृष्णभक्तान्न बाधते ॥ ४ ॥

इति श्रीविट्ठलेश्वरोक्ता चतुःश्लोकी समाप्ता ।

ज्वर-चतुःश्लोकी

नमामि त्वानन्तशक्तिं परेशं
सर्वात्मानं केवलं ज्ञप्तिमात्रम् ।
विश्वोत्पत्तिस्थानसंरोधहेतुं
यत्तद् ब्रह्म ब्रह्मलिङ्गं प्रशान्तम् ॥ १ ॥

कालो दैवं कर्म जीवः स्वभावो
द्रव्यं क्षेत्रं प्राण आत्मा विकारः ।
तत्संघातो बीजरोहप्रवाह-
स्त्वन्मायैषा तन्निषेधं प्रपद्ये ॥ २ ॥

नानाभावैर्लीलयैवोपपन्नै-
र्देवान् साधूँल्लोकसेतून् बिभर्षि ।
हंस्युन्मार्गान् हिंसया वर्तमानान्
जन्मैतत्ते भारहाराय भूमेः ॥ ३ ॥

तप्तोऽहं ते तेजसा दुःसहेन
शान्तोग्रेणात्युल्बणेन ज्वरेण ।
तावत्तापो देहिनां तेऽङ्घ्रिमूलं
नो सेवेरन् यावदाशानुबद्धाः ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्भागवतस्था ज्वरचतुःश्लोकी समाता ।

अम्बरीष-पञ्चश्लोकी

स वै मनः कृष्णपदारविन्दयो-
र्वचांसि वैकुण्ठगुणानुवर्णने ।
करौ हरेर्मन्दिरमार्जनादिषु
श्रुतिं चकाराच्युतसत्कथोदये ॥ १ ॥

मुकुन्दलिङ्गालयदर्शने दृशौ
तद्भृत्यगात्रस्पर्शेऽङ्गसङ्गमम् ।
घ्राणं च तत्पादसरोजसौरभे
श्रीमत्तुलस्या रसनां तदर्पिते ॥ २ ॥

पादौ हरेः क्षेत्रपदानुसर्पणे
शिरो हृषीकेशपदाभिवन्दने ।
कामं च दास्ये न तु कामकाम्यया
यथोत्तमश्लोकजनाश्रया रतिः ॥ ३ ॥

एवं सदा कर्मकलापमात्मनः
परेऽधियज्ञे भगवत्यधोक्षजे ।

सर्वात्मभावं विदधन्महीमिमां
तन्निष्ठविप्राभिहितः शशास ह ॥ ४ ॥
ईजेऽश्वमेधैरधियज्ञमीश्वरं
महाविभूत्योपचिताङ्गदक्षिणैः ।
ततैर्वसिष्ठासितगौतमादिभि-
र्धन्वन्यभिस्रोतमसौ सरस्वतीम् ॥ ५ ॥
इति श्रीमद्भागवतस्था अम्बरीषपञ्चश्लोकी समाप्ता ।

गीतामृत

[गीता से संकलित जीवन में क्षण-प्रतिक्षण
मार्गदर्शक श्लोक]

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ १ ॥

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः
स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदै-
र्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा
पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा
देवाय तस्मै नमः ॥ २ ॥

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वंदे जगद्गुरुम् ॥ ३ ॥

प्रपन्न पारिजाताय तोत्त्रवेत्रैकपाणये ।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृतदुहे नमः ॥ ४ ॥

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानंद माधवम् ॥ ५ ॥

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥ ६ ॥
देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ ७ ॥

न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ ८ ॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ ९ ॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥१०॥
देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ॥११॥
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥१२॥
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥१३॥

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥१४॥
प्रसादे सर्वदुखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥१५॥
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥१६॥
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥१७॥
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥१८॥
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥१९॥
काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ॥२०॥
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च ।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ॥२१॥
एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥२२॥
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥२३॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥२४॥
श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥२५॥
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥२६॥
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥२७॥
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥२८॥
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥२९॥
साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥३०॥
अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥३१॥
सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च ।
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥३२॥
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥३३॥

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥३४॥
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥३५॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥३६॥
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥३७॥
यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥३८॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥३९॥
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥४०॥
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥४१॥
तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥४२॥
यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन ।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥४३॥

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥४४॥
मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥४५॥
अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी ॥४६॥
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥४७॥
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥४८॥
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥४९॥
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ॥५०॥
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥५१॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनीसन्तुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥५२॥
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥५३॥

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति ॥५४॥
समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् ।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम् ॥५५॥
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः ।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः ॥५६॥
नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ॥५९॥
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् ।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥५८॥
प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव ।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ॥५९॥
उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते ।
गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते ॥६०॥
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः ॥६१॥
मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥६२॥
न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥६३॥

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥६४॥
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ ६५ ॥
ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥६६॥
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ६७
इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥६८॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥६९॥
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥७०॥
नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥७१॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥७२॥

श्रीसुदर्शन-कवचम्

अथ विनियोगः

ॐ अस्य श्रीसुदर्शनकवचमहामंत्रस्यनारायण-ऋषिः। श्रीसुदर्शनो देवता॥ गायत्री छन्दः॥ दुष्टं दारयतीति कीलकम्॥ हन हन द्विष इति बीजम्॥ सर्वशत्रुक्षयार्थे सुदर्शनस्तोत्रपाठे विनियोगः॥

अथ न्यासः

ॐ नारायणऋषये नमः शिरसि॥ ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे॥ ॐ दुष्टं दारयतीति कीलकाय नमः हृदये॥ ॐ हां ह्रीं ह्रूँ द्विष इति बीजाय नमः गुह्ये॥ ॐ सुदर्शनज्वलत्पावकसंकाशेति कीलकाय नमः सर्वाङ्गे॥ इति ऋष्यादिः॥

अथ हृदयादिन्यासः

ॐ नारायणऋषये नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ गायत्रीछन्दसे नमः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ दुष्टं दारयतीति कीलकाय नमः मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ

ह्रां ह्रीं ह्रूँ द्विष इति बीजाय नमः अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ सर्वशत्रुक्षयार्थे श्रीसुदर्शनदेवतेति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ नारायणऋषये नमः हृदयाय नमः ॥ ॐ गायत्रीछन्दसे नमः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ दुष्टं दारयतीति कीलकाय नमः शिखायै वषट् ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ द्विष इति बीजाय नमः कवचाय हुम् ॥ ॐ सुदर्शनज्वलत्पावक संकाशेति नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ सर्वशत्रुक्षयार्थे सुदर्शन देवतेति अस्त्राय फट् ॥ इति न्यासं विधाय ध्यानं कुर्यात् ॥

अथ ध्यानम्

सुदर्शनं महावेगं गोविन्दस्य प्रियायुधम् ।
ज्वलत्पावकसंकाशं सर्वशत्रुविनाशनम् ॥ १ ॥
कृष्णप्रीतिकरं शश्वद् भक्तानां भयभंजनम् ।
संग्रामे जयदं तस्माद् ध्यायेदेवं सुदर्शनम् ॥ २ ॥

अथ मंत्रः

ॐ ह्रां ष्ट्रीं ह्रूँ नमो भगवते भो भो सुदर्शन चक्र दुष्टं दारय दारय दुरितं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा ॥

अथ सुदर्शन-कवचम्

श्री कृष्णाय नमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥

ॐ वैष्णवानां हि रक्षार्थं श्रीवल्लभनिरूपितः ।
सुदर्शनमहामंत्रो वैष्णवानां हितावहः ॥ १ ॥

यंत्रमध्ये निरूप्यन्ते चक्राकारं च लिख्यते ।
उत्तरागर्भरक्षा च परीक्षितहिते रतः ॥ २ ॥

ब्रह्मास्त्रवारणं चैव भक्तानां भयभंजनः ।
वधं च दुष्टदैत्यानां खण्डं खण्डं च कारकः ॥ ३ ॥

वैष्णवानां हितार्थाय चक्रं धारयते हरिः ।
पीताम्बरः परब्रह्म वनमाली गदाधरः ॥ ४ ॥

कोटिकन्दर्पलावण्यो गोपिकाप्राणवल्लभः ।
श्रीवल्लभः कृपानाथो गिरिधृक् शत्रुमर्दनः ॥ ५ ॥

दावाग्निपानकर्ता च गोपीभयनिवारकः ।
गोपालो गोपकन्याभिः समावृत्तोऽधितिष्ठते ॥ ६ ॥

व्रजमण्डलप्रकाशी च रामकृष्णजगन्मयः ।
गो-गोपिकासमाकीर्णो वेणुवादनतत्परः ॥ ७ ॥

कामरूपी कलावाँश्च कामिन्यां कामदो विभुः ।
मन्मथो मथुरानाथो माधवो मकरध्वजः ॥ ८ ॥

श्रीधरः श्रीकरश्चैव श्रीनिवासः सतां गतिः ।
मुक्तिदो मुक्तिदो विष्णुर्भूधरो भूतभावनः ॥ ९ ॥

सर्वदुःखहरो वीरो दुष्टदैत्यविनाशकः ।
श्रीनृसिंहो महाविष्णुः श्रीनिवासः सतां गतिः ॥ १० ॥

चिदानन्दमयो नित्यः पूर्णब्रह्मसनातनः ।
कोटिभानुप्रकाशी च निश्चितार्थस्वरूपकः ॥ ११ ॥

भक्तप्रियः पद्मनेत्रो भक्तानां वांछितप्रदः ।
हृदि कृष्णो मुखे कृष्णो नेत्रे कृष्णश्च कर्णयोः ॥ १२ ॥

भक्तिप्रियश्च श्रीकृष्णः सर्वं कृष्णमयं जगत् ।
कालमृत्युयमाहूतं भूतप्रेतो न दृश्यते ॥ १३ ॥

पिशाचा राक्षसाश्चैव हृदि रोगाश्च दारुणाः ।
भूचराः खेचराः सर्वे डाकिनी शाकिनी तथा ॥ १४ ॥

नाटकं चेटकं चेव छलं छिद्रं न दृश्यते ।
अकाले मरणं तस्य शोकदुःखं न लभ्यते ॥ १५ ॥

सर्वविघ्नं क्षयं याति रक्ष मे गोपिकाप्रिय ।
भयदावाग्निचौराणां विग्रहे राजसंकटे ॥ १६ ॥

व्याल-व्याघ्र-महाशत्रु-वैरिबन्धो न लभ्यते ।
आधिव्याधिहरश्चैव ग्रहपीडा विनाशनम् ॥ १७ ॥

इमे सप्तदशश्लोका यंत्रमध्ये च लिख्यते ।
वंशवृद्धिर्भवेत्तस्य श्रोता च फलमाप्नुयात् ॥ १८ ॥

कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत्कृष्णाष्टमी भवेत् ।
देवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रमयुतानां चतुष्टयम् ॥ १९ ॥

वैष्णवानां हि रक्षार्थं वैष्णवानां हिताय च ।
सुदर्शनमहामंत्रो लभते जयमङ्गलम् ।
सर्वपापहरः कृष्ण ! त्वामहं शरणं गतः ॥ २० ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं सुदर्शनकवचं
सम्पूर्णम् ।

सूरदासजी के पद

(१)

चितवन रोके हू न रही ।
श्याम सुन्दर सिन्धु सन्मुख,
सरित उँमगि बही ॥
प्रेम सलिल प्रवाह मोही, कोऊ न थाह लई ।
लोल लहरि कटाक्ष, घूँघट-पट कगार ढई ॥
नाव पलकैं धीर नावक, परत नाहिं गही ।
मिली सूर समुद्र श्यामहिं, फिरि न उलट बही ॥

(२)

भक्तबुद्धि को प्रबोधन

चलि सखि ! तिहिं सरोवर जाहिं ।
जिहिं सरोवर कमल कमला,
रवि बिना बिकसाहिं ॥

(६७)

हंस उज्ज्वल पंख निर्मल,
अङ्ग मलि-मलि न्हाहिं ।
मुक्ति मुक्ता अनगीने फल,
तहाँ चुनि-चुनि खाहिं ॥

अतिहि मगन महा मधुर रस,
रसन मध्य समाहिं ।
पदुम-बास सुगन्ध शीतल,
लेत पाप नसाहिं ॥

सदा प्रफुल्लित रहैं जल बिनु,
निमिष नहिं कुम्हिलाहिं ।
सघन गुंजत बैठि उन पर,
भौंरहू बिरमाहिं ॥

देखि नीर जु छिलछिलौ जग,
समुझि कछु मन माँहि ।
सूर क्यों नहिं चलै उड़ि तहँ,
बहुरि उड़िबौ नाहिं ॥

(६८)

(३)

मन का बुद्धि को प्रबोधन

चकई री ! चलि चरन-सरोवर,
जहाँ न प्रेम-वियोग ।

जहँ भ्रम-निसा होत नहि कबहूँ,
सोइ सायर सुख-जोग ॥

जहाँ सनक-सिव हंस, मीन मुनि,
नख-रवि-प्रभा प्रकास ।

प्रफुलित कमल, निमिष नहिं ससि-
डर, गुंजत निगम-सुबास ॥

जिहिं सर सुभग मुक्ति-मुक्ताफल,
सुकृत-अमृत-रस पीजे ।

सो सर छाँड़ि कुबुद्धि बिहंगम,
इहाँ कहा रहि कीजे ॥

(६६)

लक्षमी-सहित होति नितक्रीडा,
सोभित सूरजदास।
अब न सुहात विषय-रस-छोलर,
वा समुद्र की आस ॥

संत नरसी मेहता के पद

(१)

तारा दास नी चरणनी रेण मस्तक धरूँ,
जेथी कोटी कल्याण पामु ।
नीरखतां नेहशुं, नेत्र अमृत ढरे,
भवतणां पाप ते क्षणमां वामुं ।।

भक्त ने भेटतां किल्विष नव रहे,
ज्ञानदीपक थकी तिमिर नासे ।
धन्य-धन्य भाग्य जे साधु संगत करे,
श्रीकृष्ण कीर्तन थकी कृष्ण भासे ।।

एक क्षणवार जे सतसङ्गत करे,
धन्य घड़ी जंतुनी तेज जाणो ।
भणे नरसैयों, भवसागर बूड़तां,
हरिजन नाव निश्चे प्रमाणो ।।

(२)

भूतल भक्ति पदारथ मोटुं,
ब्रह्मलोक मां नाही रे ।
पुण्य करी अमरापुरी पाम्या,
अन्ते चौरासी मांही रे ॥

हरिना जन तो मुक्ति न मागे,
मागे जन्मोजन्म अवतार रे ।
नित सेवा नित कीर्तन ओच्छव,
नीरखवा नन्दकुमार रे ॥

भरत खंड भूतलमां जनमी,
जेणे गोविंद ना गुण गाया रे ।
धन-धन रे अेना माता-पिता ने
सफल करी अेणे काया रे ॥

धन वदांवन धन ये लीला,
धन ये ब्रज ना वासी रे ।

(७२)

अष्ट महासिद्धि आंगणिये उभी,
मुक्ति छे अेमनी दासी रे ॥
अे रसनो स्वाद शंकर जाणे,
के जाणे शुक जोगी रे ।
कांई अेक जाणे रे व्रज नी गोपी;
भणे नरसैंयो भोगी रे ॥

संत सहजोबाई का पद

राम तजूँ मैं गुरु को न बिसारूँ,
गुरु के सम हरि को न निहारूँ।
हरि ने जन्म दियो जग मांही,
गुरु ने आवागमन छुटाहीं।
हरि ने पाँच चोर दिये साथा,
गुरु ने लई छुड़ाए अनाथा॥

हरि ने रोग भोग उलझायो,
गुरु जोगी कर सबै छुड़ायो।
हरि ने कर्म-मर्म भरमायो,
गुरु ने आतम रूप लखायो॥

हरि ने मोसों आप छिपायो,
गुरु दीपक लै आप दिखायो।
चरनदास पर तन मन वारूँ,
गुरु न तजूँ हरि को तज डारूँ॥

संत दयाबाई का पद

भवजल नदी भयावनी, किस विधि उतरूँ पार।
साहेब मेरी अरज है, सुनिये बारम्बार॥

जो मेरे करमन लखो, तो नहिं होत उबार।
दयादास पर दया करि, दीजै चूक बिसार॥

कृष्ण नाम के लेत ही, पातक जरें अनेक।
रे नर हरि के नाम की, राखो मन में टेक॥

सन्त कबीरदास का पद

चादर हो गई बहोत पुरानी।
अब तो सोच समझ अभिमानी ॥
अजब जुलाहा चादर बीनी, सूत करम की तानी
सुरति निरति का भरना दीना, तब सबके मनमानी
चादर ·····॥

शङ्का मान जान जिय अपने, है यह वस्तु बिरानी
कहें कबीर यह राखि जतन से, ये फिर हाथ न आनी
चादर·····॥

सन्त नानकदेव का पद

हरि बिन तेरो कौन सहाई ।।

काके मात पिता सुत बनिता, को काहू को नाहीं

हरि बिन·····।।

धन धरनी अरू सम्पति सगरी, जो मानो अपनाई

तन छूटे कुछ संग न चाले, जहाँ की तहाँ रह जाई

हरि बिन·····।।

दीन दयाल सदा दुख भंजन, तासों रुचि न बढाई

नानक कहत जगत सब मिथ्या, ज्यौं सपना रैनाई

हरि बिन·····।।

सन्त रैदास का पद

नरहरि, चञ्चल है मति मेरी
कैसे भगति करूँ मैं तेरी
नरहरि·····॥

सब घट अन्तर रमे निरन्तर, मैं देखन नहिं जाना
गुन सब तोर, मोर सब अवगुन, मैं उपकार न माना
नरहरि·····॥

तेरा मेरा कुछ नहिं जग में, प्रभु ही करें निस्तारा
कह रैदास कृष्ण करुणामय, जय जय जगत अधारा
नरहरि·····॥

भवरोग पथ्य

(राग ख्यालनी देशी)

हरि नु नाम रसायण सेवे,
पण जो पथ्य पलाय नहीं ।
नाम रटणनु फल नव पामे,
ने भव रोग टलाय नहीं ॥

पहलुं पथ्य असत्य न वदवुं,
निंदा पर नी थाय नहीं ।
निज वखाण नहीं करवा,
नहीं सुणवा, व्यसन कशुंय कराय नहीं

हरिजन ने दुभाय न जरिये,
हरिजन निन्दा थाय नहीं ।
खल आगल हरिनाम तणा,
गुण भूले पण वर्णाय नहीं ॥

हरिहर माहे भेद गणीने,
वितर्क वाद वदाय नहीं ।
वेद, शास्त्र, आचार्यवरोनां,
वचनो उल्लंधाय नहीं ॥

(७६)

नामतणा अतुलित महिमाने,
व्यर्थ वखाण मनाय नहीं ।
छे हरिनाम हवे डर शों,
ईम जाणी पाप कराय नहीं ॥
छे हरिनाम हवे डर शों,
ईम निजकर्तव्य तजाय नहीं ।
निजवर्णाश्रम धर्म साचवी,
दुर्जन संग सजाय नहीं ॥
परनारी माता सम लेखी,
कदी कुदृष्टि कराय नहीं ।
स्यम परधन पाषाण ग णी ने,
मन अभिलाष धराय नहीं ॥
जीव सकल हरिना जाणी ने,
कंशुये कष्ट अपाय नहीं ।
मन, वाणी, काया थी कोई नु,
किंचित कुडुं थाय नहीं ॥
हुं हरिनो, हरि छे मम रक्षक,
अेह भरोसो जाय नहीं ।
जे हरि करशे, ते मम हित नु,
अे निश्चय बदलाय नहीं ॥

(८०)

ईतर नाम सरखुं साधारण,
हरिनुं नाम गणाय नहीं ।
लौकिक धर्मो साथ नामने,
कदीअे सरखावाय नहीं ॥

कर्युं, करू छुं भजन आटलुं,
ज्यां, त्यां वात कराय नहीं ।
हुं मोटो, मुजने सौ पूजे
अे अभिमान धराय नहीं ॥

आ सहु पथ्य हृदय मा राखे,
कदीअे पण भुलाय नहीं ।
नाम रसायण मुख थी सेवे,
तो ते अेले जाय नहीं ॥

स्वल्प समय मां सिद्धि मेलवे,
त्यां संदेह जराय नहीं ।
श्री हरिदास तणां स्वामी ने,
मलता वार जराय नहीं ॥

अेवुं श्रीवल्लभ प्रभुनुं नाम

अेवुं श्री वल्लभ प्रभु नु नाम
अमने प्राण प्यारूँ छे।
अेवुं श्री विट्ठल प्रभु नु नाम
अमने प्राण प्यारूँ छे॥
प्राण प्यारूँ छे अमने अतिशे व्हालुं छे
पुष्टि मार्ग प्रकटाव्यो दैत्यो नो ताप नशाव्यो
अेवुं श्री वल्लभ प्रभु नु नाम…
सेवा मार्ग चलाव्यो भक्ति मार्ग विस्तार्यो
अेवुं श्री विट्ठल प्रभु नुं नाम…
मेवाड मध्ये विराजे जेनुं स्वरूप सुन्दर राजे
अेवुं श्री श्रीनाथजी नुं नाम…
काकरौली मध्ये विराजे रूडो रायसागर गाजे
अेवुं श्री द्वारिकाधीश नु नाम…
गोकुल मा गौधनचारी वृंदावन कुंजबिहारी
अेवुं श्रीकृष्णचन्द्र नु नाम
अमने प्राण प्यारूँ छे अमने अतिशे व्हालुं छे

समय मारो साधजे व्हाला

समय मारो साधजे व्हाला करूँ हूँ तो काला वाला
अन्त समय मारो आवशे ज्यारे
नहीं रहे देहनुं भान भान
अेवे समय मुखे तुलसी देजो
देजो यमुना पान पान
जीभ लडी मारी परवश बनशे
जो हारी बेसुं हुं हाम हाम
अेरे समय मारी व्हारे चढ़ी ने
राखजे तारूँ नाम नाम
कण्ठ रूधांशे ने नाडीओ तूटशे
तूटशे जोवन दोर दोर
अेवे समय मारा अलबेला जी
करजो बंसरी शोर शोर
आंखलड़ी मारी पावन करजो
ने देजो अेकज ल्हाण ल्हाण
श्याम सुन्दर तारी झाँखी करीने
भक्तो छोड़े प्राण प्राण

मा बाप ने भुलशो न हि

भूलो भले बीजुं बधुं मा बाप ने भुलशो नहि
अगणित छे उपकार अेना अेह विसरशो नहि
असह्य वेठी वेदना त्यारे दीठुं तम मुखडुं
अे पुनित जनना कालजां पथ्थर बनी छुंदशो नहि
काढो मुखे थी कोलियां मोंमां दई मोटां करचा
अमृत तणां दे नार सामे झेर उछालशो नहि
लाखो लड़ाव्यां लाड तमने कोड सहु पूरा कर्या
अे कोड ना पूरनारना कोड पूरवा भुलशो नहि
लाखो कमाता हो भले मां बाप जेथी ना ठर्या
अे लाख नहि पण राख छे अे मानवु भुलशो नहि
सन्तान थी सेवा चहो तो सन्तान छो सेवा करो
जेवुं करो तेवुं भरो अे भाव ना भुलशो नहि
भीने सुई पोते अने सूके सुवाडचा आपने
अे अमीमय आँख ने भूली ने भींजवशो नहि
पुष्पो बिछाव्यां प्रेम थी जेणे तम्हारा राह पर
अे राहबरना राह पर कंटक कदी बनशो नहि
धन खरचता मलशे बधुं माता-पिता मलशे नहि
अेनां पुनित चरणो तणी चाहना भुलशो नहि

नि. ली. श्रीकृष्णप्रियाजी के भजन

(१)

मोहन से मन को लगाना, हो···
तुझे जाना जरूरी ॥

जल्दी से तू कर तैयारी,
आरही काल की है असवारी ।
फिर क्या करेगा बहाना हो···॥ १ ॥

हुए केश सित आया बुढ़ापा,
खोता क्यों तू अपना आपा ।
हाथ रहेगा पछताना हो···॥ २ ॥

यमुना पुलिन सुभग बृन्दावन
शोभित श्री राधा मनमोहन ।
माँग ले वोही ठिकाना हो···॥ ३ ॥

चरण कमल 'कृष्णा' मोहनके
साथी हैं तेरे जीवनके ।
कोई नहीं अपना बेगाना हो···॥ ४ ॥

श्री शुद्धाद्वैत जप-यज्ञ समिति की संस्थापिका

नि. ली. श्री कृष्णप्रिया बेटीजी महाराज

प्रादुर्भाव
आषाढ़ शु. १५, सं. १९८०

लीला-प्रवेश
आषाढ़ कृ. १०, सं. २०१५

132

गो० श्री शरदवल्लभा बेटीजी महाराज

अध्यक्षा

श्री शुद्धाद्वैत जप-यज्ञ समिति

(२)

भज ले प्रेम मगन हो मनवाँ
राधेश्याय श्यामाश्याम ॥

वंशी वाला प्यारा मोहन
वार दे उसकी छबी पर तन मन
फिर फिर नाहीं मिले नर तनवाँ
राधेश्याम श्यामाश्याम ॥ १ ॥

जग में जीवन थोड़े दिन का
फेरा है चौरासी लख का
हरि चरणों में लगे ठिकनवाँ
राधेश्याम श्यामाश्याम ॥ २ ॥

सुत दारा की मोहक फाँसी
यह सब क्षणिक चमक चपला सी
कर सत् चित् आनन्द में रमनवाँ
राधेश्याम श्यामाश्याम ॥ ३ ॥

'कृष्णा' यहाँ से जाना जरूरी
जाने पर क्या मिले मजूरी
प्रेम से कर मालिक का कमवाँ
राधेश्याम श्यामाश्याम ॥ ४ ॥

(८६)

(३)

आँखों में तू समा जा ओ साँवले कन्हैया
दिल में ही घर बना जा ओ साँवले कन्हैया ॥१॥

कबसे हूँ खोजती मैं तेरा पता न पाया
रस्ता तू ही बता जा ओ साँवले कन्हैया ॥ २ ॥

विषयों की झाड़ियों में हूँ जा रही उलझती
तू ही इसे सुलझा जा ओ साँवले कन्हैया ॥ ३ ॥

कुछ बस नहीं है मेरा भवपार कैसे जाऊँ
तट है कहाँ दिखा जा ओ साँवले कन्हैया ॥ ४ ॥

'कृष्णा' यही है बिनती अपने में कर लो गिनती
मुरली मधुर बजा जा ओ साँवले कन्हैया ॥ ५ ॥

(४)

नायक हो तुम्ही बृजमण्डल के
गोविन्द हरे गोपाल हरे ।
पालक हो तुम्ही धरणी-तल के
गोविन्द हरे गोपाल हरे ॥

जिस नाम की नौका पर चढ़ के
अनगिनती पार अधम थे हुए
नाविक हो तुम्ही भव सागर के ॥ गोविन्द०

(८७)

लेकर उस नाम सहारे को
निर्बल जन भी भयहीन हुए
रक्षक हो तुम्हीं प्रभु निज जन के ।। गोविन्द०

तेरी मुरली की मधुर सुधा में
सारा विश्व समाया है
जीवन हो तुम्हीं 'कृष्णा' सबके ।। गोविन्द०

(५)

न दे दोगे दया की भीख
दामन को न छोड़ेंगे ।
जो है ख्वाहिश बहुत दिन से
वही अब लेके छोड़ेंगे ।। १ ।।
करा करते हो क्यों इनकार
आखिर हमसे मिलने में,
मगर कितना ही फटकारो
तेरे दर को न छोड़ेंगे ।। २ ।।

न आवेगी दया तुमको जरा देखूँगी कब तक से
जो ताकत होगी आँसू में बुलाकर के ही छोड़ेंगे ।।३।।

न जाने क्यों निठुरता आ गई तुममें दयासागर
मगर हम भी तो तेरे नाम के बल को न छोड़ेंगे ।।४।।

(८८)

चुरा के दिल को अब
आँखें चुराने से मिलेगा क्या
मगर 'कृष्णा' किसी दिन
हम तुम्हें ही लेके छोड़ेंगे ॥ ५ ॥

(६)

भज ले हमेशा दिल में हरिनाम ही सही है।
घट-घट में एक वोही ज्योती समा रही है ॥ १ ॥
वोही अखिल जगत के कण-कण में व्याप्त है रे
उनकी हँसी ही जग को पागल बना रही है ॥ २ ॥
जिसमें है लय सभी का उत्पत्ति स्थल भी वोही
पालक भी है वही और नाशक भी बस वही है ॥३॥
जो गम्य योगियों को भी हो नहीं है सकता
वह सुलभ प्रेम से है सत्ता अलग नहीं है ॥४॥
उसके ही हैं अनेकों अवतार रूप गुण भी
मुरली लिये हाथों में 'कृष्णा' खड़ा वही है ॥५॥

(७)

जो देख रहा वह सपना है
जो देख रहा वह सपना।
यह जान नहीं यह अपना है
जो देख रहा वह सपना ॥ १ ॥

(८९)

क्यों सपने में भूल रहा रे
जगने पर ना कोई तेरा
जब तक जीवन रैन तभी तक
चलता है यह सपना ॥
जो देख० ॥ २ ॥

जिसको मेरा मेरा कहता छोड़ उन्हीं को जाना
ऐसी सफर तुझे करनी है लौट वहाँ से न आना ॥
जो देख० ॥ ३ ॥

धन तेरा न देह तेरी है
सब कुछ है बोराना
'कृष्णा' नेह लगा मोहन की
मुरली का मधुर तराना ॥
जो देख० ॥ ४ ॥

(८)

एक दिन देह बिरानी होय ।
ता दिन की गति समझ सखी री,
रही नींद में सोय ॥ एक दिन० ॥१॥
साथी मीत कोउ नहिं चलिहैं,
छोड़ेंगे सब तोय ॥ एक दिन० ॥२॥

(९०)

माता पिता भगिनी सुत बन्धू,
सबहि रहेंगे रोय ॥ एक दिन० ॥३॥
'कृष्णा' भज गोविन्द कमल पद,
वोही साथी होय ॥ एक दिन० ॥४॥

(९)

निज चरण में नाथ मेरी अब लगा देना मती ।
आपका ही वाक्य है कि "न मे भक्तः प्रणश्यति" ॥१॥
जब तेरी इच्छा बिना जग में न कुछ होता कहीं ।
ईश फिर क्यों हो रही दीन जन की ये गती ॥२॥
जब तेरी सन्तान सारा विश्व है मेरे प्रभो ।
देखते हो आज क्यों अपने जनों की दुर्गती ॥३॥
नाथ दुन्निया को ठिकाना हो भले ही दूसरा ।
पर अधम 'कृष्णा' की ऐहिक पारलौलिक तुम गती॥४॥

(१०)

मचा आनन्द गोकुल में बधाई है बधाई है ।
प्रगट भये आज यदुराई बधाई है बधाई है ॥१॥
सुनी यह बात जब ब्रज में कि लालन यशुमती जाये ।
मुदित हो गोपियाँ धाई बधाई है बधाई है ॥२॥

(९१)

बड़ा आनन्द का सागर बधाई ले चले ग्वाले ।
नवनिधि नन्द गृह आई बधाई है बधाई है ॥३॥

लुटाते रत्न मणि माणिक मगन हो नन्दजी मनमें ।
है प्रमुदित रोहिणी माई बधाई है बधाई है ॥४॥

सभी आशिष देते हैं कि जुग-जुग जिये नन्दलाल ।
चले गृह 'कृष्णा' हरषाई बधाई है बधाई है ॥५॥

(९२)

मेरी मिट्टी को हे भगवन् ठिकाने से लगा देना ।
कसम तुमको तुम्हारे विरद का नाता निभादेना ॥

यदी मैं दूर हूँ तुमसे तो कमजोरी तुम्हारी है
तुम्हें ताकत जो हो फिर से मुझे वापस बुला लेना ॥

मुझे दुनियाँ यदि है खींचती बन्धन तेरे ढीले
जरा कस दो उन्हें मुझको भले कैदी बना लेना ॥

रहम की है जो आदत छोड़ दो मेरे लिये उसको
मुझे बेरहम बन कर के गुनाहों की सजा देना ॥

तुम्हें देकर के जो वापस लिया फिर से उसे लेलो
ओ 'कृष्णा' कर कृपा का दान फिर अपनी बना लेना ॥

(९२)

(१२)

कृष्ण का नाम मुख से निकलता रहे ।
जल विरह का नयन से ढलकता रहे ॥

जग व्यथायें निरन्तर हृदय में रहे
जग दिवानी मुझे क्यों न कहता रहे
पाद सेवन तुम्हारा ही बनता रहे ॥

हमको दुनियाँ की कुछ भी न परवाह हो
भोग अरु मोक्ष की भी न कुछ चाह हो
तेरी झाँकी को मन ये मचलता रहे ॥

हो भले कर्म से निज नरक भी मुझे
माँग इतनी वहाँ भी न भूलूँ तुझे
'कृष्णा' इतनी हमारी सफलता रहे ॥

(१३)

गोवर्धन की सघन कुञ्ज में
युगल छबी को किसने देखा ।
देखा है उन मतवालों ने
जिनने जग को फिर ना देखा ॥

(१३)

विश्वमोहिनी माया उलझी
जिनके हास की उस आभा में ।
उस तड़िता सी चपल हँसी की
मधुर छवी को किसने देखा ॥

जिसके अङ्ग अनङ्ग गर्व को
खण्डित करनेवाले से हैं ।
उन अङ्गों की दिव्य प्रभा को
किसने कब औ कहाँ पर देखा ॥

जिसकी पाकर कृपा तरे अगणित
ऐसे जो अघ के भरे थे ।
'कृष्णा' उस दानी को
किसने कृपादान भी देते देखा ॥

(१४)

अष्टाक्षर धुन सुमिरनी

श्रीकृष्णः शरणं मम श्रीकृष्णः शरणं मम ॥
कलि युग का यह महा मंत्र है श्रीकृष्णः शरणं मम ॥

श्रीकृष्णः शरणं मम श्रीकृष्णः शरणं मम ॥

वल्लभ का आदेश यही है श्रीकृष्णः शरणं मम ॥
श्रीकृष्णः शरणं मम श्रीकृष्णः शरणं मम ॥

शरणागति का साधन ये है श्रीकृष्णः शरणं मम ॥
श्रीकृष्णः शरणं मम श्रीकृष्णः शरणं मम ॥

दीनों का उद्धारक ये है श्रीकृष्णः शरणं मम ॥
श्रीकृष्णः शरणं मम श्रीकृष्णः शरणं मम ॥

पतितों का पावन कर्ता है श्रीकृष्णः शरणं मम ॥
श्रीकृष्णः शरणं मम श्रीकृष्णः शरणं मम ॥
निज जन के दुख का हर्ता है श्रीकृष्णः शरणं मम ॥
श्रीकृष्णः शरणं मम श्रीकृष्णः शरणं मम ॥
सर्व शास्त्र का सार यही है श्रीकृष्णः शरणं मम ॥
श्रीकृष्णः शरणं मम श्रीकृष्णः शरणं मम ॥

दुखियों का उद्धारक यही है श्रीकृष्णः शरणं मम ॥
श्रीकृष्णः शरणं मम श्रीकृष्णः शरणं मम ॥
'कृष्णा' सार का सार यही है श्रीकृष्णः शरणं मम ॥

(१५)

कामना

अब प्रभु कृपा करो यह भाँती,
सब तजि भजन करौं दिन राती ॥
यह अभिमान रहे जिय मेरे,
गोपीजन वल्लभ पति मेरे ॥
रहे दीनता यह अनुरूपा,
मैं सेवक प्रभु जगमय रूपा ॥
मन वच कर्म तबहि हित होई,
जब शरणागति दृढ़ मति होई ॥
भाव अनन्य चरण रति तोसों,
कोऊ दुःख ना पावे मों सो ॥
'कृष्णा' रहे भावना ऐसी,
गति मिलिहै योगिन के जैसी ॥
मिलिहैं तुरत जनम संगाती,
सब तजि भजन करौं यह भांती ॥

"माँगो तो यही माँगो"

नि. ली. श्री कृष्णप्रियाजी के वचनामृत

सामर्थ्य का दान प्रभु करते हैं परन्तु
संकल्प का कार्य अपना है।

*

सत् संकल्प यदि सेवक का है तो प्रभु
उसे अवश्य ही पूर्ण करते हैं।

*

वात्सल्य भाव से प्रभुकी सेवा करते हुए अपनी
समस्त इच्छाओं की पूर्ति उनके द्वारा होगी,
ऐसा दृढ़ विश्वास रखना और इसी विश्वास
के आधार पर अन्याश्रय न करना।

*

मंगल की मंगल कामना एवं मंगल सन्देश
के द्वारा विश्व का मंगल होता रहे।

*

निर्मल ज्ञान भी मोक्ष की प्राप्ति का साक्षात् साधन है पर यदि भगवान् को भक्ति से रहित हो तो उसकी उतनी शोभा नहीं होती।

*

कर्मठ तथा उत्साही व्यक्तियों के पास लक्ष्मी अपने आप आ जाया करती है।

*

यदि मानव अपनी आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग करना सीख ले तो उसके द्वारा किये गये कोई भी कार्य निष्फल न हों।

*

मानव जीवन आहार, निद्रा, भय और मैथुन में गँवाने के लिए नहीं। यह साधन का धाम है और मोक्ष का द्वार।

*

148

मैं निश्चित रूप से कह रही हूँ कि शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय जैसा सरल मार्ग भगवत्-प्राप्ति का अन्य कोई नहीं है।

*

एकमात्र प्रभु को अपना परम सुहृद, परम आश्रय और सच्चा साथी समझकर उनके नाम के निरन्तर स्मरण का अभ्यास डालना चाहिए।

*

भगवन्नाम रूपी महौषध भवरोग दूर होने पर अमृतत्व प्रदान करते हुए स्थायी शक्ति प्रदान करेगा।

*

मैत्री करने योग्य कौन ? वह भी प्रभु ही और प्रभु से सम्बन्ध कराने वाले भक्त और उनके चरित्र।

सन्त डोंगरेजी ना वचनामृत

१ आनंद पोतानामांज छे छतां मनुष्य आनंद बाहर शोधे छे मनुष्य स्त्रीना शरीरमां धनमां आनंद शोधे छे.

२ घर मां रहेवु अे पाप नथी पण घर ने मनमां राखवुं ये पाप छे.

३ ईश्वरनु स्मरण छोड़शो नहि, सलाह एक ईश्वरनी ज लेवी.

४ वंदना अेकला शरीरथी नहि पण मनथी पण करो वंदन प्रभु ने बंधनमां राखे छे.

५ दुःखमां साथ आपे ते ईश्वर सुखमां साथ आपे ते जीव.

६ आंखनो, मननो, धननो, वाणीनो सद्उपयोग करो तो मरण सुधरशे.

७ मनने खूब पवित्र राखो कारण के मन तो मर्या पछी पण साथे आववानु छे.

८ संसारने छोड़वानी जरूर नथी विषयनो मोह छोड़वानी जरूर छे.

९ जीभ सुधरे तो जीवन सुधरे, जीभ बगड़े तो जीवन बगड़े.

१० जगत मारा माटे शुं बोले छे ते जाणवानी इच्छा राखशो नहि पण जगदीश्वर मारा माटे शुं कहेशे तेनो ख्याल राखजो.

148

११ संतति अने सम्पत्ति दरेक ने पूर्व ना प्रारब्ध कर्म अनुसार मले छे, तेथी तेमां मनुष्ये हर्ष शोक करवो नहि.

१२ पुण्य भूली जाओ परन्तु करेला पापने याद राखो.

१३ ईश्वरे जे आप्यु छे तेमां संतोष माने ते श्रीमंत, ईश्वरे जे आप्यु छे तेने जे ओछु माने ते दरिद्री छे.

१४ मान मांगशो नहि, मान बीजा ने आपशो.

१५ मनुष्य ने सुखदु:ख आपनार तेनु कर्म छे.

१६ सेवा बतावबा माटे न करो भगवान ने राजी करवा माटे करो.

१७ सर्व नो आशीर्वाद मेलवशो तो सर्वेश्वर तमारा घेर आवशे कोई नो निसासो न लेशो.

१८ कोईना गुरु थवानी इच्छा न राखशो, गुरु थवु होय तो मनना गुरु थाव.

१९ जगत बगडचु नथी पण मन अशुद्ध होवाने कारणे जगत बगडचु लागे छे.

२० भोजन जेनु सारु हशे तेनु भजन सारुं नहि थाय.

२१ जगतमां वखाण करे तो राजो थईश नहि निन्दा करे तो नाराज थईश नहि.

२२ जगतनी खुशामत करशो तो ते शुं आपे ? माटे खुशामत करवी होय तो भगवाननीज करवी.